

MessageVortex

Transport Independent Messaging anonymous to 3rd Parties

Inauguraldissertation
zur
Erlangung der Würde eines Doktors der Philosophie
vorgelegt der
Philosophisch-Naturwissenschaftlichen Fakultät
der Universität Basel
von
Martin Gwerder (06-073-787)
von Glarus GL

November 22, 2016

Original document available on the edoc sever of the university of Basel edoc.unibas.ch.



Genehmigt von der Philosophisch-Naturwissenschaftlichen Fakultät Auf Antrag von Prof. Dr. Christian F. Tschudin

Prof. Dr. Heiko Schuldt

Basel, FIXME datum der fakultätsversammlung FIXME Signature line with Name of Dean of Faculty below

Contents

| 1. | Introc | | |
|----|--------|---|--------------------------------------|
| | 1.1. | | |
| | 1.2. | Notation | |
| | | 1.2.1. Cryptography | |
| | | 1.2.2. Code and commands . | |
| | | | 2 |
| 2. | Main | | |
| | 2.1. | | |
| | 2.2. | BO2: Attacking unlinkability and ci | ing unlikability against an adverser |
| | 2.3. | | 5 |
| I. | | | |
| | | | |
| 3. | | | ol |
| | 3.1. | | 11 |
| | 3.2. | | |
| | 3.3. | | |
| | 3.4. | Reliable | |
| | 3.5. | Diagnosable | 12 |
| | 3.6. | Available | |
| | 3.7. | Rough draft of Protocol Layers . | |
| | 3.8. | • | |
| 4. | | | |
| | 4.1. | | |
| | 4.2. | | |
| | 4.3. | | |
| | 4.4. | | |
| | | | |
| | 4.5. | | ocol |
| | 4.6. | | CoAP) |
| | 4.7. | | col |
| | 4.8. | | |
| | 4.9. | | 17 |
| | | | 17 |
| | 4.11. | MMS | |
| | 4.12. | Roundup for Transport Protocols | 17 |
| 5. | Existi | ing Research and Implementations | on the Topic |
| | | | 19 |
| | | * * | |
| | | | |
| | | | |
| | 5.2. | | |
| | 5.3. | | |
| | 5.4. | | |
| | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | |
| | 5.5. | | |
| | - 0 | | |
| | 5.6. | • | Use Reply Blocks |
| | 5.7. | • | |
| | | • | |
| | | | |
| | | • | n |
| | | 5.7.3.1. Covert Chann | el and Channel Exploitations |
| | | 5.7.3.2. Spread Spect | rum |
| | | · | y |
| | | | els |

| 5.8. | Cryptogi | aphy | 21 |
|-------|------------|--|-----------|
| | 5.8.1. | | 21 |
| | 0.0.1. | | - · 21 |
| | | | 21 |
| | E 0 0 | | 21 21 |
| | 5.8.2. | -, , , , | |
| | | | 22 |
| | | 1 71 31 7 | 22 |
| | 5.8.3. | | 22 |
| | 5.8.4. | Deniable Encryption and Deniable Steganography | 22 |
| | 5.8.5. | Key Sizes | 22 |
| 5.9. | Routing | 2 | 22 |
| | 5.9.1. | | 22 |
| | 5.9.2. | | 23 |
| | 5.9.3. | | 23 |
| | | | 23 23 |
| | 5.9.4. | | |
| | | | 23 |
| | | • | 24 |
| | 5.9.5. | | 24 |
| | | 5.9.5.1. Argon2 | 24 |
| 5.10. | System | Implementations | 24 |
| | 5.10.1. | | 24 |
| | 5.10.2. | , | - · 24 |
| | 5.10.3. | | 24 |
| | 5.10.3. | | 25 |
| | | | |
| | 5.10.5. | | 25 |
| | 5.10.6. | | 25 |
| | 5.10.7. | | 25 |
| | 5.10.8. | | 25 |
| | 5.10.9. | I^2P | 25 |
| | 5.10.10. | Freenet | 25 |
| | | | 26 |
| | | | -0 26 |
| | | | 26 |
| | | | 26 26 |
| | | | |
| | | | 26 |
| | | | 26 |
| | | | 26 |
| | 5.10.18. | Hordes | 26 |
| | 5.10.19. | Salsa | 26 |
| | 5.10.20. | AP3 | 26 |
| | | | 26 |
| | | , | 26 |
| | | | -0 26 |
| | | | 26 |
| | | | 20 27 |
| | 5.10.25. | · · | |
| | | | 28 |
| | | | 28 |
| | | | 28 |
| | 5.10.26. | Interfaces of Mail Endpoints | 28 |
| | 5.10.27. | S/MIME 2 | 28 |
| | 5.10.28. | PGP/MIME | 29 |
| | 5.10.29. | XMMP 2 | 29 |
| 5 11 | | | -0 29 |
| 0 | 5.11.1. | | -0 29 |
| | J. 1 1. 1. | | 29 29 |
| | | | |
| | | 1 , , | 29 |
| | | 1 1 5 | 29 |
| | | | 30 |
| | | | 30 |
| | | 5.11.1.6. Targeted Hash Puzzle | 30 |
| | | | 30 |

| | | | 5.11.1.8. | Discrete Logarithm Puzzle | 30 |
|----|--------|-----------|-------------|---|------|
| | | | 5.11.1.9. | Subset sum puzzle | 30 |
| | | 5.11.2. | Memory-B | ound Proof of work | 30 |
| | | | 5.11.2.1. | Moderately hard, memory-bound functions | 30 |
| | | | 5.11.2.2. | Memory bound puzzle based on pattern databases | 30 |
| | | 5.11.3. | | for Proof of Work Algorithms | 30 |
| | 5 12 | | | | 30 |
| | J. 1Z. | 5.12.1. | | cryption Algorithms | 30 |
| | | | | | |
| | | 5.12.2. | | rgeting Anonymity | 31 |
| | | | 5.12.2.1. | Probing Attacks | 31 |
| | | | 5.12.2.2. | Hotspot Attacks | 31 |
| | | | 5.12.2.3. | Message Tagging and Tracing | 31 |
| | | | 5.12.2.4. | Side Channel Attacks | 31 |
| | | | 5.12.2.5. | Timing Attacks | 31 |
| | | | 5.12.2.6. | Sizing Attacks | 31 |
| | | | 5.12.2.7. | Bugging Attacks | 31 |
| | | | 0.12.2.7. | Bugging through certificate or identity lookup: | 31 |
| | | | | | |
| | | | | Bugging through DNS traffic: | 32 |
| | | | | Bugging through external resources: | 32 |
| | | 5.12.3. | | Service Attacks | 32 |
| | | | 5.12.3.1. | Censorship | 32 |
| | | | 5.12.3.2. | Credibility Attack | 32 |
| 6. | Applie | ed Method | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 35 |
| ٠. | 6.1. | | | | 35 |
| | 0.1. | 6.1.1. | • | Philosophy | 35 |
| | | 6.1.2. | | | |
| | | 6.1.2. | | n leakage | 35 |
| | | | 6.1.2.1. | P2P design | 35 |
| | | | 6.1.2.2. | Decoy traffic generation | 35 |
| | | | 6.1.2.3. | Message tagging or bugging protection | 36 |
| | | | 6.1.2.4. | Message replay protection | 36 |
| | | | 6.1.2.5. | No Dedicated Infrastructure Philosophy | 36 |
| | | 6.1.3. | Accounting | | 36 |
| | | 6.1.4. | - | ation | 36 |
| | | 6.1.5. | • | straping | 36 |
| | | 6.1.6. | | | 37 |
| | | | | lection | |
| | | 6.1.7. | • | | 37 |
| | 6.2. | | | | 37 |
| | | 6.2.1. | Transport I | Layer | 38 |
| | | 6.2.2. | Blending L | ayer | 38 |
| | | 6.2.3. | Routing La | ayer | 38 |
| | | | 6.2.3.1. | Block Structure | 38 |
| | | | 6.2.3.2. | MURBs | 39 |
| | 6.3. | Protocol | | | 39 |
| | 0.0. | 6.3.1. | | ock | 39 |
| | | 0.3.1. | | | |
| | | | 6.3.1.1. | Ephemeral Identity | 39 |
| | | | 6.3.1.2. | Requests | 39 |
| | | | | newIdentity request: | 39 |
| | | | | queryPeer request: | 40 |
| | | | | queryCapabillity request: | 40 |
| | | | | messageQuota request: | 40 |
| | | | | transferQuota request: | 40 |
| | | | | queryQuota request: | 40 |
| | | 6.3.2. | Boarrost D | | 40 |
| | | 0.3.2. | Request R | · | |
| | | | 6.3.2.1. | Clear Text Requests | 40 |
| | | | 6.3.2.2. | Requests | 40 |
| | | | 6.3.2.3. | Replys | 40 |
| | | 6.3.3. | Main block | (| 40 |
| | | | 6.3.3.1. | Routing Blocks | 40 |
| | | | 6.3.3.2. | Routing Log Block | 40 |
| | | | 6.3.3.3. | Reply Block | 41 |
| | | | 6.3.3.4. | payload Block | 41 |
| | | | J.U.U.T. | Parious DICCIN | -t I |

Contents

| | | 6.3.4. | Accounting | 1 | | | | | | | | | | | . 41 |
|-----|--------|--------------|----------------|-------------|------------------|----------|-------|------|-------|-------------------|--------|---|------|------|------|
| | 6.4. | Protocol | _ | • | | | | | | | | | | | |
| | 0.4. | | | | | | | | | | | | | | |
| | | 6.4.1. | Received E | | - | | | | | | | | | | |
| | | 6.4.2. | Transmissi | | | - | | | | | | | | | |
| | 6.5. | Protocol | Analysis . | | | | | | | | | | | | . 41 |
| II. | Result | s | | | | | | | | | | | | | . 43 |
| | 6.6. | Vortex C | lient | | | | | | | | | | | | . 45 |
| | 6.7. | | ddresses . | | | | | | | | | | | | |
| | 0.7. | 6.7.1. | Vortex Acc | | | | | | | | | | | | |
| | | 6.7.1. | | | | | | | | | | | | | |
| | | 0.7.2. | Vortex nod | | | | | | | | | | | | |
| | | | 6.7.2.1. | Public v | | | | | | | | | | | |
| | | | | Stealth v | | | | | | | | | | | |
| | | | | Hidden | | | | | | | | | | | |
| 7. | Mess | ageVorte | c - Transpor | t Indepe | ndent M | lessagi | ng an | onym | ous t | o 3 rd | Partie | s | | | . 47 |
| | 7.1. | | Implementa | | | | | | | | | | | | |
| | 7.2. | | ucture | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | |
| | 7.3. | | ng | | | | | | | | | | | | |
| | 7.4. | - | layer | | | | | | | | | | | | |
| | 7.5. | | Flows | | | | | | | | | | | | |
| | 7.6. | Consider | ations for B | Building N | <i>l</i> lessage | s | | | | | | | | | . 48 |
| | | 7.6.1. | Ephemeral | l identitie | s | | | | | | | | | | . 48 |
| | | 7.6.2. | Timing of n | | | | | | | | | | | | |
| | | 7.6.3. | Building Di | | | | | | | | | | | | |
| | | 7.0.0. | | Implicit I | | | | | | | | | | | |
| | | | | • | • | | | | | | | | | | |
| | | | | Automat | | | | | | | | | | | |
| | | | 7.6.3.3. | On-Dem | | | | | | | | | | | |
| | 7.7. | Verification | on of require | ements | | | | | | | | | | | . 48 |
| | | | | RQ1 (Ze | ero Trust | t): | | | | | | | | | . 49 |
| | | | | RQ2 (P2 | 2P): | | | | | | | | | | 49 |
| | | | | RQ3 (ur | , | | | | | | | | | | |
| | | | | RQ4 (ur | - | • | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | RQ5 (re | | | | | | | | | | | |
| | | | | RQ6 (ac | | | | | | | | | | | |
| | | | | RQ7 (ar | nonymisa | ation): | | | | | | | | | |
| | | | | RQ8 (bo | otstrapp | oing): . | | | | | | | | | . 49 |
| | | | | RQ9 (er | ncryption | n variet | v): . | | | | | | | | 49 |
| | | | | RQ10 (e | | | | | | | | | | | |
| | 7.8. | Consider | ations for F | | | | | | | | | | | | |
| | 7.0. | 7.8.1. | | | | | | | | | | | | | |
| | 7.0 | | Time of se | | | | | | | | | | | | |
| _ | 7.9. | | rld Conside | | | | | | | | | | | | |
| 8. | | rity Analys | | | | | | | | | | | | | |
| 9. | Additi | | siderations | | | | | | | | | | | | |
| | 9.1. | Man in th | ne Middle A | ttacks to | Convers | sations | | | | | | | | | . 53 |
| | 9.2. | Identifica | tion of parti | icipating | account | t | | | | | | | | | . 53 |
| | | 9.2.1. | Identification | | | | | | | | | | | | |
| | | 9.2.2. | Identification | - | | | | | | | | | | | |
| | | 9.2.3. | | - | • | | | | | | | | | | |
| | | | Identification | | | | | | | | | | | | |
| | | 9.2.4. | Identification | | | | | | | | | | | | |
| | | 9.2.5. | Identification | | | | | | | | | | | | |
| | 9.3. | Storage | of Message | s and qu | ieues . | | | | | | | | | | . 53 |
| | 9.4. | Economy | of transfer | · | | | | | | | | | | | . 53 |
| Ш | Discus | - | | | | | | | | | | | | | |
| | | | ons on usir | | | | | | | | | | | | |
| ıυ. | | | | - | | | | | | | | | | | |
| | | | content | | | | | | | | | | | | |
| 11. | | | | | | | | | | | | | | | |
| | 11.1. | Effects of | f anonymou | ıs comm | unicatio | n on be | ehave | our | | | | | | | |
| IV. | Apper | ndix | | | | | | | | | | | | | . A1 |
| | | | on of the pr | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | |
| | - | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | |

[parts=1]

List of Tables

| 4.1. comparison of protocols in terms of the suitability criteria as transport layer | 17 |
|--|----|
| 7.1. Requests and the applicable criteria for replies | 49 |

List of Figures

| 3.1. A traceroute to the host www.ietf.org | |
|--|----|
| 5.1. Mail Agents | 27 |
| 7.1. Overview of the Vortex modules | |

List of Requirements

| RQ1 No infrastructure should be trusted unless it is the senders or the recipients infrastructure | 35 |
|--|---------|
| RQ2 Mixes and peers must be undistinguishable | 35 |
| RQ3 The message should be untagable (neither by a sender, or by an intermediate party such as a mixe | er). 36 |
| RQ4 The message should be unbugable (neither by a sender, or by an intermediate party such as a mixe | er).36 |
| RQ5 A message must not be replayable | 36 |
| RQ6 The system must be able to do accounting without being linked to a real identity | 36 |
| RQ7 System must be able to anonymise sender and recipient at any point of the transport layer and a | at any |
| point of mixing unless it is the sender or the recipient itself | 36 |
| RQ8 The system must allow to boot strap from a zero knowledge or near zero knowledge point and exter | าd the |
| network on its own. | 36 |
| RQ9 The system must be able to use multiple symmetric, asymmetric, and hashing algorithms | 37 |
| RQ10 The system must be usable without cryptographic know-how and with well known tools | 37 |
| | |

1. Introduction

Almon Brown Strowger was owner of a funeral parlour in St. Petersburg. He filed a patent in March 10th 1891 for an "Automatic Telephone Exchange" [69]. This patent built the base for modern automated telephone systems. According to several sources, he was annoyed by the fact that the local telephone operator was married to another undertaker. She diverted potential customers of Mr. Strowger to her husband instead, which caused Almon B. Strowger to lose business. In 1922, this telephone dialing system which is nowadays called pulse dialing became the standard dialing technology for more than 70 years until it was replaced by tone dialing.

This dialing technology enabled automatic messaging for voice and text messages (e.g. telex) up until today and built the base technology for today's routed networks.

These networks are building the base for our communication-based society today. We are using these networks today as a common communication meaning for all purposes and do spend very little thoughts on the possible consequences arising if someone is able to put hands on this communication. This is not only a question if someone wants to hide something. The main problem is that the broad availability of data enabled our society to judge on peoples not only on what they are doing but as well, on what they did. While this is nothing bad people seem to be unable to differentiate that things that might have been common and normal in the past might be judged differently in present.

Numerous events in present and past show that multiple actors, some of which are state sponsored, collected data on a broad base in the internet. Whether this is a problem or not may be a disputable fact. Undisputed is however that if data is not handled with care peoples are accused with numerous "facts" that are more than questionable. To show that this may happen even under complete democratic control we might refer to events such as the "secret files scandal" (or "Fichenskandal") in Switzerland. In the years from 1900 to 1990 Swiss government collected 900'000 files in a secret archive (covering roughly 10% of the natural and juristic entities within Switzerland at that time). More about the Fichenskandal may be found in the Swiss Federal Archives (https://www.bar.admin.ch)

A series of similar attempts to attack privacy on a global scale have been discovered by whistle blower Edward Snowden. The documents leaked in 2009 by him claim that there was a data collection starting in 2010. Since these documents are not publicly available, it is

hard to to prove claims based on these documents. However – because the documents were screened by a significant number of journalists spanning multiple countries, the information seems credible.

According to these documents (verified by NRC) NSA infiltrated more than 50k computers with malware to collect classified, or personal information. They furthermore infiltrated Telecom-Operators (mainly executed by british GCHQ) such as Belgacom to collect data and targeted high member of governments even in associated states (such as the germans president mobile phone). A later published shortened list of "selectors" in germany showed 68 telephone and fax numbers targeting economy, finance and agricultural parts of the german government.

This list of events shows that big players are collecting and storing vast amounts of data for analysis or possibly future use. The list of events shows also that the use of this data has in the past been at least partially questionable. As a part of possible counter measures this work analyses the possibility of using state of the art technology to minimize the information footprint of a person on the internet.

We leave a vast information footprint in our daily communication. On a regular email we disclose everything in an "postcard" to any entity on its way. Even when encrypting a message perfectly with today's technology (S/MIME[30] or PGP[24]) leaves at least the originating and the receiving entity disclosed or we rely on the promises of a third party provider which offers a proprietary solution. Even in those cases we leak informations such as "message subject", "frequency of exchanged messages", "size of messages", or "client beeing used". A good anonymity protocol has therefore far more attributes to cover than the message itself. It includes beside the message itself, all metadata, and all the traffic flows. Furthermore a protocol anonymising messages should not rely on the trust of infrastructure other than the infrastructure under control of the sending or receiving entity as a trust in any third party might be misleading.

Furthermore – Any central infrastructure is bound to be of special interest to anyone gathering data concerning the using entities of such a protocol. It furthermore may be manipulated in order to attack the messages or their flow. So central infrastructure has to be avoided.

In this work a new protocol is designed to allow message transfer through existing communication channels. These messages should be unobservable to any third party. This unobservability does not only cover the message itself but all metadata and flows associ-

ated with it. We called this protocol "Message Vortex" or in short just "Vortex". The protocol is designed in such a way so that it is capable to use a wide variety of transfer protocols. It is even possible to switch protocols while the messages are in transfer. This allows media breaches (at least on a protocol level) and makes analysis even harder.

The new protocol should allow safe communication without the need of trusting the underlying transport media. Furthermore it is desirable that the usage of the protocol itself is possible without altering the immediate behaviour of the transport layer. That way it is possible to use the transport layers normal traffic to increase the noise in which information has to be searched.

This work splits into multiple parts. In the first part we are collecting available researches and technologies. We emphasize in all technologies on the strength and weaknesses relevant to this work. In the second part we reassemble the parts to a new protocol. In the third part we analyse the protocol for fitness of the purpose. We try to find weaknesses and work out recommendations for the protocol usage. In the last part we discuss the results and try to summarize the findings. Try to elaborate to what extend the protocol fulfils the requirements of this work.

1.1. Contributions

This thesis contributes to the topic in the following senses:

- It introduces a consistent model for message delivery which includes all endpoints and involved parties.
- It shows an approach based on existing protocols for anonymous communication which gives full control of the anonymity to the sender while controlling the costs.
- It offers a client application implementing the pro-²/₃ posed Protocol as IMAPv4 cache daemon and as ⁵/₅ SMTP relay.

1.2. Notation

1.2.1. Cryptography

The theory in this document is heavily based on symmetric encryption, asymmetric encryption and hashing. In order to use a uniformed notation I use $E^{K_a}(M)$ (where a is an index to distinguish multiple keys) resulting in $\mathbf{M^{K_a}}$ as the encrypted message. If we are reflecting a tuple of information we write it in boldface. to express the tuples content we use an-

gular brackets L(normalAddress, vortexAddress). If we want Messages encrypted with multiple keys do list the used keys as a comma separated list in superscript $E^{K_b}(E^{K_a}(M)) = M^{K_a,K_b}$.

For a symmetric encryption of a message \mathbf{M} with a key K_a resulting in $\mathbf{M}^{\mathbf{K_a}}$ where a is an index to distinguish different keys. Decryption uses therefore $D^{K_a}(\mathbf{M}^{\mathbf{K_a}}) = \mathbf{M}$.

As notation for asymetric encryption we use $E^{K_a^1}(\mathbf{M})$ where as K_a^{-1} is the private key and K_a^1 is the public key of a key pair K_a^p . The asymmetric decryption is noted as $D^{K_a^{-1}}(\mathbf{M})$.

For hashing we do use $H(\mathbf{M})$ if unsalted and H^{S_a} if using a salted hash with salt S_a . The generated hash is shown as H_M if unsalted and $H_M^{S_a}$ if salted.

If we want to express what details contained in a tuple we use the the notation $M\langle t, MURB, serial \rangle$ respectively if encrypted $M^{K_a}\langle t, MURB, serial \rangle$.

$$asymetric : E^{K_a^{-1}}\left(\mathbf{M}\right) = \mathbf{M}^{\mathbf{K}_a^{-1}}$$

$$D^{K_a^{-1}}\left(E^{K_a^{-1}}\left(\mathbf{M}\right)\right) = \mathbf{M}$$

$$D^{K_a^{-1}}\left(E^{K_a^{-1}}\left(\mathbf{M}\right)\right) = \mathbf{M}$$

$$symetric : E^{K_a}\left(\mathbf{M}\right) = \mathbf{M}^{\mathbf{K}_a}$$

$$D^{K_a}\left(E^{K_a}\left(\mathbf{M}\right)\right) = \mathbf{M}$$

$$hashing(unsalted) : H\left(\mathbf{M}\right) = \mathbf{H}_{\mathbf{M}}$$

$$hashing(salted) : H^{S_a}\left(\mathbf{M}\right) = \mathbf{H}_{\mathbf{M}}^{\mathbf{S}_a}$$

In general Subscripts denote selectors to differentiate values of the same type and superscript denote relevant parameters to operations expressed.

1.2.2. Code and commands

Code blocks are always displayed as light grey block with line numbers:

```
public class Hello {
   public static void main(String args[]) {
      System. println ("Hello ._"+args[1]);
   }
}
```

Commands entered at the command line are in a grey box with top and bottom line. Whenever root rights are required the command line is prefixed with a "#". Commands not requiring specific rights are prefixed with a "\$". Lines without a trailing "\$" or "#" are output lines of the previous command. If long lines have to be broken to fit into the paper a "\(\nabla \)" is inserted to indicate that the line break has been introduced for readability.

```
~ su - # javac Hello,java # exit $ java Hello Hello.

$ java Hello Hello. This is a very long command—line that had to be broken to fit into the code box displayed on this page."

Hello. This is a very long command—line that had to be broken to fit into the code box displayed on this page.
```

1.2.3. Hyperlinking

The electronic version of this document is hyperlinked. This means that references to the glossary or the literature may be clicked to find the respective entry. Chapter or table references are clickable too.

2. Main Research Question

The main topic of this thesis was defined as follows:

 Is it possible to have specialized messaging protocol used in the internet based on "state of the science" technologies offering a high level of unlikability (sender and receiver anonymity) towards an adverser with a high budget and privileged access to internet infrastructure?

Based on this main question there are several sub questions grouped around various topics:

- What technologies and methods may be used to provide sender and receiver anonymity and unlinkability when sending messages against a potential adverser? (RQ1)
- 2. How can entities utilizing these technologies and methods be attacked and what measures are available to circumvent such attacks? (RQ2)
- 3. How can attacks targeting anonymity of a sending or receiving entity be mitigated by design? (RQ3)

2.3. RQ3: Attack Mitigation by design

Within this question we define baselines in order to mitigate attacks by defining guidelines for using the protocol. We analyse the effectiveness of the guidelines and try to elaborate the general achievement level of the protocol by looking at the criteria defined in RQ1.

2.1. RQ1: Sending messages maintaining unlikability against an adverser

This question covers the principal part of the work. We try to elaborate first rough criterias for the protocol. We then create a list of suitable technologies. Based on this list we define a protocol combining these technologies and researches to a solution. This solution will be implemented and analysed for suitability based on the criteria defined.

2.2. RQ2: Attacking unlinkability and circumvention

Within this questions we look at common attacks and test resistance of the protocol based on the definition of the protocol. We do this by first collecting well known attacks (either generic or specific to a technology used in the protocol). We then try to elaborate if these attacks might be successful (and if so under what cicumstances).

Part I. Methodes

In this part of the thesis we collect requirements, definitions, methods, and existing research relevant to the topic of this thesis. We start with collecting requirements for the protocol.

Having the requirements we collect numerous existing technologies on research and implementation level. Each of the technologies is quickly categorized and either further studied or rejected naming the reasons for rejection.

The list of technologies and research collected is big in this chapter. All relevant technologies either widely adopted or thoroughly researched should be included in this chapter. All Technologies and research are categorized.

Technologies are always referenced through their respective standard. If applicable multiple standards may be part of the analysis. A very quick introduction into the protocol is given and then analysed for suitability for a specific problem addressed in this work.

Research are referenced by a paper. If applicable multiple related researches and papers are collected together into a bigger picture an then analysed for suitability concerning specific problem. If related to a standard technology links to that technology are provided where relevant.

3. Requirements for an anonymising Protocol

In the following sections we try to elaborate the main countries accepting the ICCPR to the full extend. characteristics of the anonymising protocol.

The main goal of the protocol is to enable Freedom 1 of speech as defined in Article 19 of the International Covenant on Civil and Political Rights (ICCPR)[72].

everyone shall have the right to hold opinions without interference

and

everyone shall have the right to freedom of expression; this right shall include freedom to seek, receive and impart information and ideas of all kinds, regardless of frontiers, either orally, in writing or in print, in the form of art, or through any other media of his choice.

We imply that not all participants in the internet share this value. As of September 1st 2016 Countries such as China (signatory), Cuba (signatory), Quatar, Saudi Arabia, Singapore, United Arab Emirates, or Myanmar did not ratify the ICCPR. Other countries such as United States or Russia did either put local laws in place superseding the ICCPR or made reservations rendering parts of it ineffective. We may therefore safely assume that freedom of speech is not given in the internet as a lot of countries explicitly supersede them.

We always have to keep in mind that we have no control over the flow of data packets in the internet. Packets may pass though any point of the world. It is not even possible to detect what way has a packet taken. The common network diagnostic tool tracert respectively traceroute tries to figure that out. But neither can a route of a packet beeing sent forseen nor can it be measured while or after sending. This is due to the fact that all routers along the way only decide for the next hop of a packet.

As an example of the problems analysing a packet route we may look at traceroute. The mapage of traceroute of Linux tells us that traceroute uses UDP, TCP, or ICMP packets with a short TTL and analyses the IP of the peer sending an TIME_EXCEEDED (message of the ICMP protocol). This information is then collected and shown as a route. This route may be completely wrong. Some of the possible cases are described in the manpage.

The output of traceroute is therefore not a reliable indication of route. Since routes do not have to be static and may be changed or even be alternating the output represents in the best case a snapshot of the current routing situation. We cannot be sure that data packets we are sending are passing only through

```
$ traceroute www.ietf.org traceroute to www.ietf.org.cdn.cloudflare-dnssec.net (104.20.0.85), 64 hops
                     147.86.8.253  0.418ms  0.593ms  0.421ms
                    147.86.8.253 0.418ms 0.993ms 0.421ms 10.19.0.253 1.177ms 0.829ms 0.782ms 10.19.0.253 0.620ms 0.427ms 0.402ms 193.73.125.35 1.121ms 0.828ms 0.905ms 193.73.125.81 2.991ms 2.450ms 2.414ms 193.73.125.81 2.264ms 1.961ms 1.959ms

    193.73.125.81
    2.264ms
    1.961ms
    1.959ms

    192.43.192.196
    6.472ms
    199.543ms
    201.152ms

    130.59.37.105
    3.465ms
    3.138ms
    3.121ms

    130.59.36.34
    3.904ms
    3.897ms
    4.989ms

    130.59.36.93
    7.515ms
    7.232ms
    7.246ms

    130.59.38.82
    7.155ms
    7.165ms
    7.034ms

    80.249.211.140
    22.749ms
    22.415ms
    22.467ms

    104.20.0.85
    22.398ms
    22.222ms
    22.146ms
```

Figure 3.1.: A traceroute to the host www.ietf.org

3.1. Anonymizing and Unlinking

If we are unable to limit the route of our packets through named jurisdictions we must protect ourselves from unintentionally breaking the law of a foreign country. Therefore we need to be anonymous when sending or receiving messages. Unfortunately most transport protocols (in fact almost all of them such as SMTP, SMS, XMPP or IP) use a globally unique identifier for senders and receivers which are readable by any party which is capable of reading the packets.

As a result anonymisation of a sender or a receiver is not simple. If messages are being sent through a relay at least the original sender might be concealed (Sender anonymity). By combining it with encryption we may even achieve a very simple form of sender and receiver pseudonymity. If cascading more relay like infrastructures and combining it with cryptography we might even achieve sender and receiver anonymity. This approach has however several downsides (see 5.9.4.2 and 5.9.1 for details) and is easily attackable.

3.2. Censorship Resistant

In our scenario in 3 we defined the adverser as someone with superior access to the internet and its infrastructure. Such an adverser might attack a message flow in several ways:

- · Identify sender
- Identify recipient
- · Read messages passed or extract meta information
- Disrupt communication fully or partially

We furthermore have to assume that all actions taken by a potential adverser are not subject to legal prosecution. This is due to the fact that an adverser trying to establish censorship may be part of a jurisdictions government. We may safely assume that there are legal exceptions in some jurisdiction for such entities.

In order to be able to withstand an adverser outlined above the protocol needs certain attributes. The message content needs to be unidentifiable by attributes or content. Whereas "Attributes" include meta information such as frequency, timing, message size, sender, protocol, ports, or recipient (list not conclusive).

3.3. Controllable trust

If we want to control trust we have to conclude that

- trust in an infrastructure is given due to the fact that it is under full control of either the sender or the recipient.
- trust in an infrastructure may not be necessary as the infrastructure is ideally unable to misuse data passed through it.

In this thesis we work with both cases. We will however never trust a third party apart from sender and recipient (no even their providers of infrastructures).

3.4. Reliable

Any message sending protocol needs to be reliable in its functionality. If means of message transport are unreliable users tend to use different means for communication.

3.5. Diagnosable

Reliability is somehow linked to transparent behaviour. This due to the fact that if something is generating a constant behaviour but we are unable to determine the reason for it (i.e. if we are expecting a different behaviour) we normally assume a malfunction. Therefore "Reliable" means not only stable by its behaviour. It means also diagnosable. User perception will not be "Reliable" if he is not able to determine causes for differences in observed and expected behaviour.

3.6. Available

Availability has two meanings in this context which do differ. A technology is available if...

1. a sender and a recipient have (or may have) the means of using it.

2. the infrastructure is providing the service (as opposed to: "is running in a degraded/faulty state unable to provide a service).

The first meaning tells us that a protocol must run independently from infrastructure the user has commonly ready.

The second meaning tells us that messages must always be capable of flowing from the sender to the recipient. As infrastructure may fail at any time the protocol must offer the possibilities to send messages through alternate routes. This sounds easy and many protocols implement such redundancies already. However, taking into account that sender and recipient is not known to a routing node this is a goal hard to achieve.

3.7. Rough draft of Protocol Layers

In order to fulfil the criteria given above we define a very rough idea of the protocol and its layers. The rough overview is given in figure 3.2. The protocol should work on the base of onion routing. Unlike Tor (see 5.10.8) it should not rely on central infrastructures. it furthermore should not be limited to onionize messages. It should be capable of splitting and reassemble messages at any layer

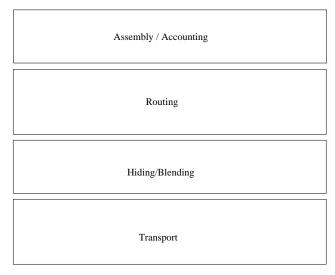


Figure 3.2.: A first rough overview for the protocol

The protocol itself should send messages through a well known transport protocol ("Transport") which will be used for our messages.

The messages will be hidden within regular messages already using that transport layer. In an ideal implementation messages sent by our protocol should be indistinguishable from regular messages (by computers and humans). In order to achieve this particular task we introduce a "Hiding / Blending" layer. This

layer is normally specific to the underlying transport layer and may vary.

The "Routing" layer is the layer that receives and sends messages. It parses only the core protocol and the data processed here is completely independent from the underlying transport layer.

The "Assembly / Accounting" layer disassembles the received messages into its parts. It then recomposes and stores the messages for further routing. In order to avoid spaming over this media some kind of accounting will be involved.

The messages passed through such a protocol stack are ononised to offer anonymity from evil nodes. Furthermore a node should be unable to tell whether a message was intended for a specific node or not (so all nodes including sender and recipient should handle identically).

In order to mitigate size based attacks (an onionised packet looses permanently data on its way) we introduce operations which may be applied to a valid message as well as to decoy traffic. The operations should be able to increase and decrease in size without being able to tell if this message is destined to a target or not. Operations not carried out due to missing data might be either intentionally or a malfunction.

The defined message operations are as follows:

- Split a message block into two parts of variable size.
 - This operation may be used to fan out decoy traffic, to cut off decoy data, or to send multiple parts of a message through diffferent routing nodes.
- Join two data blocks to a bigger block using an xor operation.
 - This operation may be used to minimise decoy traffic or to rejoin data which has been split earlier.
- Fork off xor'ed data from a data block by applying an xor operation to a received block with a block of random data.
 - With this operation we may create decoy traffic, or split a message into two parts.
- · Encrypt a block with a given key.
- Decrypt a block with a given key.

To avoid making this system attractive to UBE an accounting system is introduced. The system works as follows:

- Routing nodes may offer their services at a cost.
 These "costs" are typically paid by solving crypto puzzles.
- The following operations may be cost effective:
 - Getting a discardable identity on a node (prerequisite for accounting).
 - Allowance to route a number of messages through the node (cost per outgoing mes-

sage) in a specified interval. This allowance is always linked to a discardable identity.

- Allowance to route a specific size of bytes through the node (cost per outgoing byte) in a specified time interval. This allowance is always linked to a discardable identity.
- Offer information about the known routing network by the node.
- Offer information about the identities current quota.

All quotas require accounting. In order to minimise accounting all these quotas must be assigned a time interval in which they are effective. this guarantees that quota data is not growing indefinitely. It is up to the node to decide what time duration is still acceptable.

In order to limit the possibility to Denial of Service (DoS) a node by overloading it the following precautions are taken:

- The message is built in such a way that message building is far more complex than message routing.
- Messages may be decrypted in parts to minimize the amount of work required to decide whether the full processing of the message will be done or the message is discarded anyway.
- The usage of inefficient operations (e.g. asymmetric encryption) is minimized.
- The server may limit specific operations.

3.8. Rough Draft of Messages

For our protocol we assume the following outline for a message:

· Header block

This block contains an ephemeral identity of the sender on the message processing host. It allows the host to decide wether he is willing to process the rest of the message or not. It is important to know that the identity block contains a symmetric key for decryption of the main block and a secret repeated in the main block. This prevents that a malicious node may exchange the main block.

Main block

This block contains all information regarding routing and processing data. It furthermore contains the payload data which may or may not contain messages.

- Routing Blocks

This block contains information of which data block should be sent to what recipient. It furthermore may contain instruction for processing the data blocks and routing/reply blocks for subsequent processing. Another

3. Requirements for an anonymising Protocol

important thing to note is that routing blocks and payload data may arrive on two different paths to the target node.

- Routing Log Block

This Block contains information about the already occurred routing in onionised form. It may be regarded as the onionised pendant of received header in an SMTP header.

- Reply Block

This Block contains a Routing block which may be used to contact the original sender of a message (e.g. for an error message)

- payload Block

These Blocks form the payload data. It might contain a message, parts of a message or decoy material.

The message is picked up from the transport layer and extracted in the blending layer. Processing is then split. First the Assembly/accounting layer is extracting the identity block and authorises further processing. The message building instructions are put into a identity specific list (with the expiration dates of the message). and the payload blocks are stored (again with the expiration date).

After having prepared the message in such a way the routing layer gets the routing blocks. Every routing block is then processed after a final approval by the accounting layer (he is in charge to keep the quotas for this identity in sync). The routing layer assembles the new messages according to the (no authorized) instructions in the routing block and sends it to the next hop where the processing restarts with the new instructions.

4. Existing Transport Layer Protocols

In this chapter we have a look at various available transport layer protocol. The main goal is to identify strong candidates as a transport layer. Main focus lies on the following criterias:

- Widely adopted (Ct1)
 - The more widely adopted and used a protocol is the harder it is for an adverser to monitor (due to the sheer mass), filter or block the protocol (censorship resistance).
- · Reliable (Ct2)

Message transport between peers should be reliable. As messages may arrive anytime from everywhere we don not have means to synchronize the peer partners on a higher level without investing a considerable effort. In order to avoid this effort we do look for inherently reliable protocols.

Symmetrical built (Ct3)

The transport layer should be built on a peer to peer base. All servers implement a generic routing which requires no prior knowledge of possible targets. This criteria neglects centralised infrastructures.

4.1. HTTP

The HTTP protocol allows message transfer from and to a server and is specified in RFC2616 [51]. It is not suitable as a communication protocol for messages due to the lack of notifications. There are some extensions which would allow such communications (such as WebDAV) but in general even those are not suitable as they require a continous connection to the server in order to get notifications. Having a "rollup" of notifications when connecting is not there by default but could be implemented on top of it.

HTTP servers listen on standard ports 80 or 443 for incomming connects. The port 443 is equivalent to the port 80 except for the fact that it has a wrapping encryption layer (usually TLS). The incomming connects (requests) must offer a header part and may contain a body part which would be suitable for transferring messages to the server. The reply onto this request is transferred over the same TCP connection containing the same two sections.

HTTP0.9-HTTP/1.1 are clear text protocols which are human readable (except for the data part which might contain binary data). The HTTP/2 (as specified in [10]) is using the same ports and default behaviour. Unlike HTTP/0.9-HTTP/1.1 it is not a clear text but a binary protocol. Headers and bodies of messages are sent



The protocol does definitely satisfy the first two main criteria (Ct1: Widely Adopted and Ct2: Reliable).

The main disadvantage in terms as message transport protocol is that this protocol is not symmetrically. This means that a server is always just "serving requests" and not sending actively information to peers. This Request-Reply violates criteria (Ct1: Symmetrically built) and makes the protocol not a primary choice for message transport.

4.2. FTP

FTP is defined in RFC959[56]. This Protocol is intended for authenticated file transfer only. There is a account available for general access ("anonymous"). This account does for security reasons normally not offer upload rights.

It is possible to use FTP as message transfer endpoint. The configuration would work as follows: "anonymous" has upload rights only. It is unable to download or list a directory. A node may upload a message with a random name. If there is a collision the node retries with another random name.

The blending layer picks messages up using an authenticated user.

This has multiple downsides. At first, handling FTP that way is very uncommon and usually requires an own dedicated infrastructure. Secondly passwords are within FTP always in plain text. This is considered as a very bad practice nowadays. Encryption as a wrapping layer (FTPS) is not common and SFTP (actually a subsystem of SSH) has nothing in common with FTP except for the fact that it may transfer files as well.

Furthermore FTP may be problematic when used in active mode for firewalls. All these problems make FTP not very suitable as transport layer protocol.

Like HTTP a main disadvantage of FTP in terms as a message transport protocol is that this protocol is not symmetrically. This means that a server is always just "serving requests" and not sending actively information to peers. This Request-Reply violates criteria (Ct3: Symmetrically built) and makes the protocol not a primary choice for message transport. The Protocol however satisfies the first two criteria (Ct1: Widely Adopted and Ct2: Reliable).

4.3. TFTP

TFTP has despite its naming similarities to FTP very little in common with it. TFTP is a UDP based file transfer protocol without any authentication scheme. This makes it not suitable as transport layer as it would leave messages open to anyone. The protocol is due to the use of UDP in a meshed network with reduntant routes. Since the internet has a lot of these redundant routes this neglects the use of this protocol.

TFTP is rarely ever used in the internet (it is quite commonly used in lans for booting over a network connection). This violates Criteria one (Ct1: Widely Adopted). TFTP is not symmetrically. This means that a server is always just "serving requests" and not sending actively information to peers. This Request-Reply violates criteria (Ct3: Symmetrically built) and makes the protocol not a primary choice for message transport. The Protocol furthermore violates Ct2 (Ct2: Reliable) as it is based on UDP without any additional error correction.

4.4. MQTT

MQTT is an ISO standard (ISO/IEC PRF 20922:2016) and was formerly called MQ Telemetry Transport. The current standard as the time of writing this document was 3.1.1 [5].

The protocol runs by default on the two ports 1883 and 8883 and may be encrypted with TLS. MQTT is a publish/subscribe based message passing protocol which is mainly targeted to m2m communication. This Protocol requires the receiving party to be subscribed in a central infrastructure in order to be able to receive messages. This makes it very hard to be used in a system without centralistic infrastructure and having no static routes between senders and recipients.

The protocol does definitely satisfy the second criteria (Ct2: Reliable). It is in the area of enduser (i.e. Internet) not widely adopted thus violating Criteria 1 (Ct1: Widely Adopted). In terms of decentralistic design the protocol fails as well (Ct3: Symmetrically built).

4.5. Advanced Message Queuing Protocol

The Advanced Message Queuing Protocol (AMQP) was originally initiated by numerous exponents based mainly in finance related industries. The AMQP-Protocol is either used for communication between two message brokers, or between a message broker and a client[4].

It is designed to be interoperable, stable, reliable and safe. It supports either SASL or TLS secured communication. The usage of such a tunnel is controlled by the immediate sender of a message. In its current version 1.0 it does however not support a dynamic routing between brokers[4].

Due to the lack of a generic routing capability this protocol is therefore not suitable for message transport in a global generic environment.

The protocol satisfys partially the first criteria (Ct1: Widely Adopted), and fully satisfies the second criteria (Ct2: Reliable). However the third criteria is violated due to the lack of routing capabilities between message brokers (Ct3: Symmetrically built).

4.6. Constrained Application Protocol (CoAP)

The Constrained Application Protocol (CoAP) is a communication Protocol which is primarily destined to m2m communication. It is defined in RFC7252[13]. It is Defined as lightweight replacement for HTTP in IoT devices and is based on UDP.

The protocol does partially satisfy the first criteria (Ct1: Widely Adopted). The second criteria (Ct2: Reliable) is only partially fulfilled as it is based on UDP and does only add limited session control on its own.

The main disadvantage in terms as message transport protocol is that this protocol is not (like HTTP) symmetrically. This means that a server is always just "serving requests" and not sending actively information to peers. This Request-Reply violates criteria (Ct3: Symmetrically built) and makes the protocol not a primary choice for message transport.

4.7. Web Application Messaging Protocol

WAMP is a websockets based protocol destined to enable M2M communication. Like MQTT it is publish/subscribe oriented. Unlike MQTT it allows remote procedure calls (RPC).

The WAMP protocol is not widely adopted (Ct1: Widely Adopted) but it is definitely reliable on a per node base (Ct2: Reliable). Due to its RPC based capability unlike MQTT a routing like capability could be implemented. Symmetrical protocol behaviour is therefore not available but could be built in relatively easy.

4.8. XMPP (jabber)

XMPP (originally named Jabber) is a synchronous message protocol used in the internet. It is specified in the documents RFC6120[65], RFC6121[65], RFC3922[64], and RFC3923[63]. The protocol is a very advanced chat protocol featuring numeros levels

of security including end-to-end signing and object encryption[63]. There is also a stream initiation extension for transferring files between endpoints [70].

It has generic routing capabilities spanning between known and unknown servers.

The protocol itself seems to be a strong candidate as a transport layer as it is beeing used actively in the internet.

4.9. SMTP

The SMTP protocol is currently specified in [42]. It specifies a method to deliver reliably asynchronous mail objects thru a specific transport medium (most of the time the internet). The document splits a mail object into a mail envelope and its content. The envelope contains the routing information which is the sender (one) and the recipient (one or more) in 7-Bit ASCII. The envelope may additionally contain optional protocol extension material.

The content should be in 7-Bit-ASCII (8-Bit ASCII may be requested but this feature is not widely adopted). It is split into two parts. These parts are the header (which does contain meta information about the message such as subject, reply address or a comprehensive list of all recipients), and the body which contains the message itself. All lines of the content must be terminated with a CRLF and must not be longer than 998 characters excluding CRLF.

The header consists of a collection of header fields. Each of them is built by a header name, a colon and the data. Exact outline of the header is specified in [60] and is separated with a blank line from the body.

It [42] furthermore introduces a simplistic model for smtp message based communication. A more comprehensive model is introduced in the section ??. As the proposed model is not sufficient for a comprehensive end-to-end analysis.

Traditionally the message itself is mime encoded. The MIME messages are mainly specified in [30], and [31]. MIME allows to send messages in multiple representations (alternates), and attach additional information (such as possibly inlined images or attached documents).

SMTP is one of the most common messaging protocols in the internet (Ct1: Widely Adopted) and it would be devastating for business of a country if for censoring reasons this protocol would be cut off. The protocol is furthermore very reliable as it has built in support for redundancy and a throughout message design making it relatively easy to diagnose problems (Ct2: Reliable). All SMTP servers are normally capable of routing and and receiving messages. Messages going over serveral servers are common (Ct3: Symmetri-

cally built) so the third criteria may be considered as fulfilled as well

SMTP is considered a strong candidate as transport layer.

4.10. SMS

SMS capability was introduced in the SS7 protocol. This protocol allows the message transfer of messages not bigger than 144 character. Due to this restriction in size it is unlikely to be suitable for this type of communication as the keys beeing required are already sized similarly leaving no space for Messages or routing information.

Secondly the protocol is not widely adopted within the internet domain. There are gateways providing bridging functionalities to the SMS service. However – the protocol itself is insignificant in the internet itself.

4.11. MMS

The Multimedia Messaging Service (MMS) is maintained by 3GPP (3rd Generation Partnership Project). This protocol is manly a mobile protocl based on telephone networks.

4.12. Roundup for Transport Protocols

| Criteria Protocol | Ct1: Widely adopted | Ct2: Reliable | Ct3: Symmetrically built |
|----------------------|---------------------|---------------|--------------------------|
| HTTP | ✓ | ✓ | × |
| FTP | ✓ | ✓ | × |
| TFTP | × | × | × |
| MQTT | ~ | ✓ | × |
| AMQP | ~ | ✓ | × |
| CoAP | ~ | ~ | × |
| WAMP | × | ✓ | ~ |
| XMPP | ✓ | ✓ | ✓ |
| SMTP | ✓ | ✓ | ✓ |
| SMS ¹ | | | |
| l MMS | | | × |

Table 4.1.: comparison of protocols in terms of the suitability criteria as transport layer

In table 4.1 we sum up all previously analysed protocols. We use "\sqrt{"}" for a fulfilled criteria, "\sqrt{"}" for a partially fulfilled criteria, and "\times" for a not fulfilled criteria. This overview shows in compact form which protocols have been identified as strong candidates for use as a transport layer in terms of an anonymising protocol.

This table shows that strong identified candidates are SMTP (being already a message sending protocol on asynchronous base) and XMPP (a real time chat protocol able to attach files. This protocol features further-

4. Existing Transport Layer Protocols

more end-to-end encryption and signing). Both have the advantages that they are really wide adopted in the internet and do support additionally advanced content (such as alternatives or attachments).

¹omitted due to message size being too small

5. Existing Research and Implementations on the Topic

5.1. Anonymity

As Anonymity we take the definition as specified in [55].

Anonymity of a subject means that the subject is not identifiable within a set of subjects, the anonymity set.¹

and

Anonymity of a subject from an attacker's perspective means that the attacker cannot sufficiently identify the subject within a set of subjects, the anonymity set.¹

Whereas the anonymity set is defined as the set of all possible subjects.

Especially the anonymity of a subject from an attacker's is very important to this paper.

5.1.1. *k***-Anonymity**

k-anonymity is a term introduced in [2]. This work claims that no one might be held responsible for an action if the action itself can only be identified as an action which has been taken by one unidentifiable entity out of k entities.

The Document distinguishes between Sender k-anonymity where the sending entity can only be narrowed down to a set of k entities and Receiver k-anonymity

5.1.2. *ℓ*-Diversity

In [47] an extended model of k-anonymity is introduced. In this paper the the authors emphasize that it is possible to break a k-anonymity set if there is additional Information available which may be merged into a data set so that a special entity can be filtered from the k-anonymity set. In other words if an anonymity set is to tightly specified a single additional background information might be sufficient to identify a specific entity in an anonymity set.

While it might be arguable that a k-anonymity in which a member is not implicitly k-anonymous still is sufficient for k-anonymity in its sense the point made in

this work is definitely right and should be taken into account.

Their approach is to introduce an amount of invisible diversity into k-anonymous sets so that simple background knowledge is no longer sufficient to isolate a single member.

5.1.3. t-Closeness

While ℓ -diversity protects the identity of an entity it does not prevent information gain. A subject which is in a class has the same attributes. This is where t-closeness[53] comes into play. t-closeness is defined as follows:

An equivalence class is said to have *t*-closeness if the distance between the distribution of a sensitive attribute in this class and the distribution of the attribute in the whole table is no more than a threshold. A table is said to have *t*-closeness if all equivalence classes have *t*-closeness.

5.2. Zero Trust

Zero trust is not a truly researched model in systems engineering. It is however widely adopted.

We refer in this work to the zero trust model when denying the trust in any infrastructure not directly controlled by the sending or receiving entity. This distrust extends especially but not exclusively to the network transporting the message, the nodes storing and forwarding messages, the backup taken from any system except the client machines of the sending and receiving parties, and software, hardware, and operators of all systems not explicitly trusted.

As explicitely trusted in our model we do regard the user sending a message (and his immediate hardware used for sending the message), and the users receiving the messages. Trust in between the receiving parties (if more than one) of a message is not necessarily given.

5.3. Pseudonymity

As Pseudonymity we take the definition as specified in [55].

¹footnotes omitted in quote

A pseudonym is an identifier of a subject other than one of the subject's real names. The subject which the pseudonym refers to is the holder of the pseudonym. A subject is pseudonymous if a pseudonym is used as identifier instead of one of its real names.²

· It is not linkable to another identity

The key in this definition is the last point is crucial and at the same time hard to achieve.

5.4. Undetectability

As undetectability we take the definition as specified in [55].

Undetectability of an item of interest (IOI) from an attacker's perspective means that the attacker cannot sufficiently distinguish whether it exists or not.²

5.5. Unobservability

As unobservability we take the definition as specified in [55].

Unobservability of an item of interest (IOI) means

- undetectability of the IOI against all subjects uninvolved in it and
- anonymity of the subject(s) involved in the IOI even against the other subject(s) involved in that IOI.

This part is very important. As we are heading for a censorship resistant solution unobservability is a key. As mentioned in this paper unobservability raises the bar of required attributes again (⇒ reads "implies"):

 $censorship\ resistance \Rightarrow unobservability$ $unobserability \Rightarrow undetectability$ $unobserability \Rightarrow anonymity$

So this means that we have to use an undetectable data channel in order to achieve censorship resistance.

5.5.1. Ephemeral Identity

In this work we use accounting on various levels. While we are dealing with anonymity accounting has still to be linked to some kind of identity for this reason we are introducing a term called "ephemeral identity".

A Ephemeral identity is a temporary identity which is defined by the following attributes:

- · It is an artificial identity
- It is only used for a short timespan

5.6. Single Use Reply Blocks and Multi Use Reply Blocks

The use of single use reply blocks were first introduced by Chaum in [16]. A routing block in general is a structure allowing to send a message to someone without knowing the targets true address. It might be differentiated into "Single Use Reply Bolcks" (SURBs) which may be used once and "Multi Use Reply Blocks" (MURBs) which may be used a limited number of times

The concept is that we have in our case a routing block which might be used up to n times (0 < n < 127). The number has been chosen for practical reasons. It is easily representable in a byte integer (signed or unsigned) on any system. It is big enough to support human communication in a sensible way and is big enough to add not too much overhead when rerequesting more MURBs. The number should not be too big because if a MURB is reused the same pattern of traffic is generated thus making the system susceptible to statistical attacks.

5.7. Censorship

As definition for censorship we take

Censorship: the cyclical suppression, banning, expurgation, or editing by an individual, institution, group or government that enforce or influence its decision against members of the public – of any written or pictorial materials which that individual, institution, group or government deems obscene and "utterly without redeeming social value," as determined by "contemporary community standards.".

Which is attributed to Chuck Stone Professor at the School of Journalism and Mass Communication, University of North Carolina. Please note that "Self Censorship" (not expressing something in fear of consequences) is a form of censorship too.

In our more technical subsystem this means

A systematic suppression, modification, or banning of data in the internet by either removal, or modification of the data, or systematic influencing of entities involved in the processing (e.g. by writing, routing, storing or reading) of this data.

²footnotes omitted in quote

5.7.1. Censorship Resistant

A censorship resistant system is a system which allows the users of the system and the data itself to be unaffected from censorship. Please note that this does not deny the possibility of censorship per se. It still exists outside the system. But it has some consequences for the system itself.

 The system must be either undetectable or out of reach for an entity censoring.

The possibility of identifying a protocol or data allows a censoring entity to suppress the use of the protocol itself.

 The entities involved in a system must be untraceable.

Traceable entities would result in means of suppressing real world entities participating in the system.

5.7.2. Parrot Circumvention

In [37] Houmansadr, Brubaker, and Shmatikov express that it is easy for a human to determine decoy traffic as the content is easily identifiable as automated content. While this is absolutely true there is a possibility here to generate "human like" data traffic to a certain extent. In our design this is the job covered by the blending layer.

5.7.3. Censorship Circumvention

Several technical ways have been explored to circumvent censorship. All seem to boil down to two main ideas:

- · Hide data.
- Copy data to a vast amount of places in order to improve the lifespan of data.

In the following section we look at technologies and ideas dealing with these circumvention technologies.

5.7.3.1. Covert Channel and Channel Exploitations

The original term of covert channels was defined by Lampson[44] as

not intended for information transfer at all, such as the service program's effect on system load.

This was defined in such a way to distinguish the message flow from

legitimate channels used by the confined service, such as the bill.

The use of a legitimate channel such as SMTP and hide information in this specific channel is not a usage

of covert channel. This methode is commonly referenced as channel exploitation. In the following section we analyse technologies for suitability in a P2P network construct as data channel.

5.7.3.2. Spread Spectrum



5.7.3.3. Steganography



5.7.3.4. Timing Channels



5.8. Cryptography

Whenever dealing with hiding data and maintaining integrity of data cryptography is the first tool in the hand of an implementer. A vast amount of research in this area does already exist. For this work we did not collect a lot of information. We focussed on algorithms either well researched and implemented or research which seem very valuable when putting this work into place.

5.8.1. Symmetric Encryption

Symmetric encryption in this paper assumes always that

$$D^{K_a}\left(E^{K_a}\left(\mathbf{M}\right)\right) = \mathbf{M} \tag{5.1}$$

For a key $K_b \neq K_a$ this means

$$D^{K_a}\left(E^{K_b}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M} \tag{5.2}$$

$$D^{K_b}\left(E^{K_a}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M} \tag{5.3}$$

5.8.1.1. AES



5.8.1.2. Camelia



5.8.2. Asymmetric Encryption

For all asymmetric encryption algorithm in this paper we may assume that

$$D^{K_a^{-1}}\left(E^{K_a^1}\left(\mathbf{M}\right)\right) = \mathbf{M} \tag{5.4}$$

$$D^{K_a^1} \left(E^{K_a^{-1}} \left(\mathbf{M} \right) \right) = \mathbf{M}$$
 (5.5)

It is important that

$$D^{K_a^{-1}}\left(E^{K_a^{-1}}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M} \tag{5.6}$$

$$D^{K_a^1}\left(E^{K_a^1}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M} \tag{5.7}$$

And for any other Keypair $K_a^p \neq K_b^p$

$$D^{K_b^{-1}}\left(E^{K_a^1}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M} \tag{5.8}$$

$$D^{K_b^1}\left(E^{K_a^1}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M} \tag{5.9}$$

$$D^{K_b^{-1}}\left(E^{K_a^{-1}}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M} \tag{5.10}$$

$$D^{K_b^1}\left(E^{K_a^{-1}}\left(\mathbf{M}\right)\right) \neq \mathbf{M}$$
 (5.11)

5.8.2.1. RSA

In 1978 the authors Rivest, Shamir, and Adleman published with [61] a paper which did revolutionize cryptography for years. In their paper the authors described an encryption method later to be called RSA which required a key pair (K_a) referenced as public (K_a^1) and private keys (K_a^{-1}) . The novelty of this system was that anything encrypted with the public key was only decryptable with the private key and vice versa.

RSA is up until the day of writing this paper not publicly know to be broken (unless a too small key size is used). However – Shor described in 1997 an algorithm which should enable quantum computers to break RSA far faster than done with common computers. In the section 5.8.5 we do elaborate this effects further.

5.8.2.2. Elliptic Curve Cryptogaphy

The elliptic curves were independently suggestd by [48] and [43] in 1986. Elliptic curve Cryptography started to be widely deployed in the public space about in 2006. Since then it seems to compete very well with the well established RSA algorithm. While being similarly well researched ECC has the advantage of far shorter key sizes for the same grade of security.

5.8.3. Homomorphic encryption



5.8.4. Deniable Encryption and Deniable Steganography



5.8.5. Key Sizes

The question of key sizes is a hard to answer as it depends on the current and future possibilities of an

adverser which is again depending on not forseeable research. We tried to collect a couple of recommendatitions.

Encrypt II (http://www.ecrypt.eu.org/) recommends currently for a "forseeable future" 256 Bits for symmetric encryption and for asymmetric encryption based on factoring modulus 15424 Bits. Elliptic Curve Cryptography and Hashing should be sufficient if used with at least 512 Bits. If the focus is reduced to the next \approx 20 years then the key size recommendations is reduced to 128 Bit for symmetric encryption, 3248 Bits for factoring modulus operations and 256 Bits for elliptic curves and hashing.

According to the equations proposed by Lenstra in [45] an asymmetric key size of 2644 Bits respectively a symmetric key length of 95 Bits, or 190 Bits for elliptic curves and hashing should be sufficient for security up to the year 2048.

According to [27] data classified up to "top secret" should be secured asymmetric encryption based on factoring modulus (no proposed encryption standard). For symmetric encryption they recommend 256 Bits, for Hashing at least SHA-384 and for Elliptic curves a 384 Bit sized key.

As it might seem not a wise idea to consider the recommendation of a potential state sponsored adverser and the Formulas proposed by Lenstra do not explicitly take quantum computers into account we therefore follow the recommendations of ENCRYPT II.

Furthermore taking all recommendations together it seems that all involved parties assume the biggest trust into elliptic curves rather than asymmetric encryption based on factoring modulus.

5.9. Routing

If we can follow data from a source to a destination we may safely assume that the participants of this data exchange are no longer anonymous. So special care should be taken to this aspect. In the past several approaches have been made in order to avoid detection of data while routing. in the following sections we will look at some basic concepts which have been proposed up until today. We describe their concept and have a look at their weaknesses discovered so far.

In System Implementations we the analyze some related real world systems regarding how they work and how they have been attacked in the past.

5.9.1. Mixing

Mixes have been first introduced by "Untraceable Electronic Mail, Return, Addresses, and Digital Pseudonyms" [16] in 1981. The basic concept in a mix goes as follows. We do not send a message directly from

the source to the target. Instead we use a kind of proxy server or router in between which picks up the packet, anonymizes it, and forwards it either to the recipient or another mix. If we assume that we have at least 3 mixes cascaded we then can conclude that:

- · Only the first mix knows the true sender
- All intermediate mixes know neither the true sender nor the true recipient (as the data comes from mixes and is forwarded to other mixes)
- · Only the last mix knows the final recipient.

This approach (in this simple form) has several downsides and weaknesses.

- In a low latency network the message may be traced by analysing the timing of a message.
- We can emphasize a path by replaying the same message multiple times (assuming we control an evil node) thus discovering at least the final recipient.
- If we can "tag" a message (with a content or an attribute) we then may be able to follow the message.

In 2003 Rennhard and Plattner analyzed the suitability for mixes as a anonymizing network for masses. They concluded that there are three possibilities to run mixes.

- Commercial Static MixNetworks
- Static MixNetworks Operated by Volunteers
- Dynamic MixNetworks

They concluded that in an ideal implementation a dynamic mix network where every user is operating a mix is the most promising solution as static mixes always might be hunted by an adverser.

5.9.2. Onion Routing

Onion routing is a further development of the concept of mixes. In onion routers every mix gets a message which is asymmetrically encrypted. By decrypting the message he gets the name of the next hop and the content which he has to forward. The main difference in this approach is that in traditional mix cascades the mix decides about the next hop. In an onionised routing system the message decides about the route it is taking.

While tagging attacks are far harder (if we exclude side channel attacks to break sender anonymity) the traditional attacks on mixes are still possible. So when adversers are operating entry and/or exit nodes it is very easy for them to match the respective traffic.

One very well known of onion routing networks is Tor (https://www.torproject.org). For more information about tor see section 5.10.8.



5.9.3. Crowds

Crowds is a network which offers anonymity within a local group. It works as follows:

- All users add themselfes to a group by registering on a so called "blender".
- · All users start a service (called jondo).
- Every Johndo takes any received message (might be from him as well) and sends it with a 50% chance either to the correct recipient or to a randomly chosen destination

While crowds do anonymize the sender from the recipient rather well the system offers no protection from someone capable of monitoring crowds traffic. The system may however be easily attacked from within by introducing collaborating jondos.

5.9.4. Mimic routes

Mimics are a set of statical mixes which maintain a constant message flow between the static routes. If legitimate traffic arrives the pseudo traffic is replaced by the legitimate traffic an outstanding observer is thus incapable of telling the difference between real traffic and dummy traffic.

If centralized mixes are used the system lacks the same vulnerabilities of sizing and observing the exit nodes as all previously mentioned systems. If we assume that sender and receiver operate a mixer by themselves the system would be no longer susceptible to timing or sizing analyses. The mimic routes put a constant load onto the network. This bandwidth is lost and may not be reclaimed. It does not scale well as every new participant increases the need for mimic routes and creates (in the case of user mixes) new mimic load.

5.9.4.1. DC Networks

DC networks are based on the work "The Dining Cryptographers Problem: Unconditional Sender and Recipient Untraceability" by Chaum[17]. In this work Chaum describes a system allowing a one bit transfer (The specific paper talks about the payment of a meal). Although all participants of the DC net are known the system makes it unable to determine who has been sending a message. The message in a DC-Net is readable for anyone. This network has the downside that a cheating player may disrupt communication without being traceable.

Several attempts have been made to strengthen the proposal of Chaum[34][73]. But no one succeeded

without introducing significant downsides on the pri- 5.9.5. Cryptopuzzles vacy side.



5.9.5.1. Argon2



5.9.4.2. Annonymous Remailer

Remailers have been in use for quite some time. There are serveral classes of remailers and all of them are somehow related to Mixnets. There are "types" of remailers defined. Although these "types" offer some kind of hierarchy none of the more advanced "types" seem to have more than one implementation in the



Pseudonymous Remailers (also called Nym Servers) take a message and replace all information pointing to the original sender with a pseudonym. This pseudonym may be used as an answer address. The most well known psydonymous remailer possibly was anon.penet.fi run by Johan Helsingius. This service has been forced several times to reveal a pseudonyms true identity before Johan HeÄűsingius decided to shut it down. For a more in depth discussion of Pseudonymous Remailers see 5.10.1

Cypherpunk remailers forward messages like pseudonymous remailers. Unlike pseudonymous remailers Cypherpunk remailers decrypt a received message and its content is forwarded without adding a pseudonym. A reply to such a message is not possible. They may therefore be regarded as an "decrypting reflector" or a "decrypting mix" and may be used to build an onion routing network for messages. For a more in depth discussion of Type I Remailers see 5.10.3.

Mixmaster remailers are very similar to Cypherpunk remailers. Unlike them Mixmaster remailers hide the messages not in an own protocol but use SMTP instead for it. While using SMTP as a transport layer Cypherpunk remailers are custom (non traditional mail) servers listening on port 25. For a more in depth discussion of type II remailers see 5.10.4.

Mixminion remailers extend the model of Mixmaster remailers. They still use SMTP but introduce new concepts. New concepts in Mixminion remailers are:

- Single Use Reply Blocks (SURBs)
- Replay prevention
- Key rotation
- · Exit poicies
- Dummy traffic

For a more in depth discussion of Mixminion remailers 200 5.10.5.

5.10. System Implementations

The following sections emphasize on implementations of anonymising (and related) protocols regardless of their usage in the domain of messaging. It is a list of system classes or their specific implementations together with a short analysis of strength and weaknesses. Wherever possible we try to refer to original sources. This is however not always possible since some of these systems are no longer in use.

If a system shows strong similarities in parts then we emphasize on this parts and analyse the findings.

5.10.1. Pseudonymous Remailer

The basic idea of remailers were dicussed in [16]. The most well known remailer was probably anon.penet.fi which operated from 1993 to 1996.

In principle an anonymous remailer works as an ordinary forwarding SMTP server. The only difference is that it strips off all header fields except for "from", "to", and "subject" and then replaces the sender and recipient address with pseudonyms (if any).

As the example shows this kind of remailer is easily attackable by an authority. Since the remailer knows tuples of pseudonyms and their respective real identity it may be forced to reveal true identities. Furthermore message may be monitored at the server or on its way and then due to the content a matching or even tagging is possible.

This remailer offers therefore no protection against an adverser defined in our problem.

5.10.2. Babel

Babel was an academic system defined in a paper by چتاحت and Tsudik in 1996[36].



5.10.3. Cypherpunk-Remailer



5.10.4. Mixmaster-Remailer



5.10.5. Mixminion-Remailer



5.10.6. Crowds

Crowds is an implementation of the crowds protocol.

5.10.7. Tarzan



5.10.8. Tor

Tor is one of the most common onion router networks these days. It is specified in [22]. It might be considered one of the most advanced networks since a lot of research has been done here.

In short tor is a network consisting of multiple onion routers. Each client first picks an entry node. Then it establishes an identity, gets a listing of relay servers, and chooses a path through multiple onion routers. This path is linked to the temporary identity. This identity (and the path connected to it) should be changed at least once a day.

There is centrally organized directory in the tor network knowing all tor relay servers. Any Tor relay server may be a directory server as well.

Many attacks involving the Tor networks have been discussed in the academic world such as [54, 8, 9, 11, 12, 21, 26] and some have even been exploited actively. In the best case the people discovering the attacks did propose mitigation to the attack an took care that these mitigations flowed back into the protocol. Some general thoughts of the attacks should be emphasized here for treatment in our protocol.

Being an exit node may be a problem in some jurisdictions. In general it seems to be accepted that routing traffic with unknown content (to the routing node) seems to be accepted as one might argue that users of Tor are not regarded bad in general. So by being unable to tell malicious or illegal traffic apart from legitimate traffic this is not a problem. However — being an exit node can mean that unencrypted and illegal traffic is leaving the routing traffic. In this specific case operators of a relay node might fear legal prosecution. This is why tor nodes may be listed as "non exit nodes"

Furthermore several DoS-Attacks have been carried out in order to overload parts of the Tor network. Most

of them do a bandwidth drain on the network layer.

Attacking anonymisation has been done by several ways. First of all the most common attack is a time wise correlation of packets if in control of an entry and an exit node. A huge attack of this kind was published in 2014 and has been published on the tor website (relay early traffic confirmation attack). This has been possible because tor is a low latency network. Another attack is to identify routes through tor by statistically analyse the traffic density in the network between nodes. More theoretical attacks focus on the possibility of controlling the directory servers to guarantee that a entity may be deanonymised because it is using compromised routers.

Generally the effectiveness of monitoring of single or multiple networks is disputed. According to a study by Johnson et al. in 2013[40] a system in the scale of PRISM should be able to correlate traffic of 95% of the users within a few days. Other sources based on the Snowden Papers claim that NSA was unable so far to De-Anonymize Tor users. However since these papers referenced to "manual analysis" the statement may be disputed when looking at automated attacks as well.

5.10.9. *I*²*P*

The name I^2P is an derived from "Invisible Internet Project" according to geti2p.net. The system itself is comparable to Tor for its capabilities. Mayor differences are:

- · P2P based
- · Packet switched routing (tor is "circuit switched")
- Different forward and backward routes (called tunnels)
- Works pseudonymously
- · Supports TCP and UDP

 I^2P has not attracted as much attention as Tor so far. So it is hard to judge upon its real qualities.

5.10.10. Freenet

Freenet was originally designed to be a fully distributed data store[18]. Exactly as I^2P it is negligible in alysed thoroughly by the scientific world.

5.10.11. Herbivore

Herbivore is a network protocol designed by Goel et Lin [33].





5.10.19. Salsa

5.10.12. Dissent

5.10.20. AP3





5.10.13. P5

5.10.21. Hydra-Onion



5.10.14. Gnutella

large number of clients.

Gnutella is not a protocol to the anonymity world in special. It is a file sharing protocol on a Peer to peer base. This is the most intresting aspect of gnutella in this context. Gnutella has proven to be working with a

The current protocol specification may be found under http://rfc-gnutella.sourceforge.net/



5.10.23. Cashmere

5.10.22. DUO-Onion



extension: [6]

5.10.15. Gnutella2

Despite its name Gnutella2 is not the next generation of Gnutella. It was a fork in 2002 from the original Gnutella and has been developed in a different direction. The specification may be found on http://g2.doxu.org.

5.10.24. SMTP

As SMTP is our trasport prototype we focus in depth onto this topic.

Todays mail transport is mostly done via SMTP protocol as specified in [42]. This protocol has proven to be stable and reliable. Most of the messages are passed from a MUA to a SMTP relay of a provider. From there the message is directly sent to the SMTP server of the recipient and from there to a server based storage of the recipient. The recipient may at any time connect to his server based storage and may optionally relocate the message to a client based (local) storage. The delivery from the server storage to the MUA of the recipient may happen by message polling or by message push (where as the later is usually implemented by a push-pull mechanism).

To understand the routing of a mail it is essential to understand the whole chain starting from a user(-agent) until arriving at the target user (and being read!). To simplify this I used a consistent model which includes all components (server and clients). The figure 5.1 shows all involved parties of a typical Mail routing. It is important to understand that Mail routing remains the same regardless of the used client. However — Availability of a mail at its destination changes drastically

5.10.16. Darknet



5.10.17. Sneakernet



5.10.18. Hordes



depending on the type of client used. Furthermore control of the mail flow and control is different depending on the client.

The model has three main players storage (derfref-Storage), agent (derfrefAgent) and service (derfref-Service). Storages are endpoint storages storing mails. Not explicitly shown are temporary storages such as spooler queues or state storages. Agents are simple programs taking care of a specific job. Agents may be exchangeable by other similar agents. A service is a bundle of agents which is responsible for a specific task or task sets.

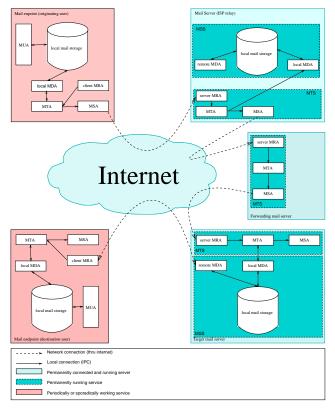


Figure 5.1.: Mail Agents

In the following paragraphs (for definitions) the term "Mail" is used synonymously to the term "Message". The reason why "Mail" has been chosen over "Messages" that a lot of terms do already exist in standard documents. In these documents the term mail is commonly used.

Mails are typically initiated by a Mail User Agent (MUA). A MUA accesses a local mail storage which may be the server storage or a local copy. The local copy may be a cache only copy, the only existing storage (when mails are fetched and deleted from the server after retrieval) or a collected representation of multiple server storages (cache or authoritative).

Besides the MUA the only other component accessing a local mail storage is the Mail Delivery Agent (MDA). An MDA is responsible for storing and fetching mails from the local mail storage. Mails destined for other accounts than the current one are forwarded to the

MTA. Mails destined to a User are persistently stored in the local mailstorage. It is important to understand that a mailstorage not nessesarily reflects a simple mailbox. It may as well represent multiple mailboxes (eg. a rich client serving multiple IMAP accounts) or a combined view of multiple accounts (eg. a rich client collecting mail from multiple POP accounts. In the case of a rich client the local MDA is part of the software provided by the user agent. In the case of a mail server the local MDA is part of the local Mailstore (not necessarily of the mail transport service).

On the server side there are usually two components (services) at work. A "Mail Transport Service" (MTS) responsible for mail transfers and a "Mail Storage System" which offers the possibility to store received Mails in a local, persistent store.

A MTS consists generally out of three parts. For incoming connects there is a daemon called Mail Receiving Agent (Server MRA) is typically a SMTP listening daemon. A Mail Transfer Agent (MTA) which is responsible for routing, forwarding and rewriting mails. And a Mail Sending Agent (MSA) which is responsible for transmitting mails reliably to another Server MRA (usually sent via SMTP).

A MSS consists out of a local storage and delivery agents which do offer uniform interfaces to access the local store. They do also deal with replication issues and grant should take care of the atomicity of transactions committed to the storage. Typically there are two different kind of MDAs. Local MDAs offer possibilities to access the store via efficient (non network based) mechanisms (eg IPC or named sockets). This is usually done with a stripped down protocol (eg. LMTP). For remote agents there a publicly – network based – agent available. Common Protocols for this Remote MDA include POP, IMAP, or MSOXMAPIHTTP.

5.10.25. Mail Endpoints

Mail endpoints consist typically of the following components:

- A Mail User agent (MUA)
- A Local Mail storage (MUA)
- A Local Mail Delivery Agent (Local MDA)
- A Mail Transfer Agent (MTA)
- A Mail Sending Agent (MSA)
- A Mail Receiving Agent (MRA)

Only two of these components do have external interfaces. These are MSA and MRA. MSA usually uses SMTP as transport protocol. When doing so there are a couple of specialities.

Portnumber is 587 (specified in [32]).
 Allthough port numbers 25 and 465 are valid and

do have usually the same capabilities, they are for mail routing between servers only. Mail endpoints should no longer use them.

· Connections are authenticated.

Unlike a normal server-to-server (relay or final delivery) SMTP connections on port 25 clients should always be authenticated of some sort. This may be based on data provided by the user (eg. username/passsword or certificate) or data identifying the sending system (eg. IP address)[32]. Failure in doing authentication may result in this port beeing misused as an sender for UBE.

Mail User Agents (MUA) are the terminal endpoint of a mail delivery. Mail user agents may be implemented as fat clients on a desktop or mobile system or as an interface over a different generic protocol such as HTTP (Web Clients).

Server located clients are a special breed of fat clients. These clients share the properties of fat clients except for the fact that they do not connect to the server. The client application itself has to be run on the server where the mail storage persists. This makes delivery and communication with the server different. Instead of interfacing with a MSA and a client MDA they may directly access the local mail storage on the server. On these systems the local mail storage may be implemented as a database in a user specific directory structure.

5.10.25.1. Fat clients

The majority of mail clients are fat clients. These clients score over the more centralistic organized web clients in the way that they may offer mail availability even if an internet connection is not available (through a client specific local mail storage). They furthermore provide the possibility to collect mails from multiple sources and store them in the local storage. Unlike Mail servers, clients are assumed to be not always online. In fact they may be offline most of the time. To guarantee the availability of a certain email address a responsible mail server for a specific address collects all mails (this is done by the MSS) and provides a consolidated view onto the database when a client connects through a local or remote MDA.

As these clients vary strongly it is absolutely mandatory for the MDA that they are well specified. Lack in doing so would result in heavy interoperability problems. Most commonly the Protocols IMAP, POP and EWS are being used these days. For mail delivery the SMTP protocol is used.

Fat clients are commonly used on mobile devices. According to [15] in Aug 2012 the most common fat email client was Apple Mail client on iOS devices (35.6%), followed by Outlook (20.14%), and Apple Mail (11%). *Email Client Market Share*[25] as a more re-

cent source lists in February 2014 iOS devices with 37%, followed by Outlook (13%), and Google Android (9%).

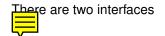
5.10.25.2. Server located clients

server located clients build an absolute minority. This kind of clients have been used mainly in the days of centralized hosts. An example for a Server Located Client is the Unix command "'mail". This client reads a mail storage from a file in the users home directory.

5.10.25.3. Web clients

Web clients are these days a common alternative to fat clients. Most big provider companies use their own proprietary web client. According to [25] the most common web clients are "'Gmail"', "'Outlook.com"', and "'Yahoo! Mail"'. All these Interfaces do not offer a kind of public plug-in interface. However, they do offer IMAP-interfaces. This important for a future generalistic approach to the problem.

5.10.26. Interfaces of Mail Endpoints



5.10.27. S/MIME

S/MIME is an extension to the MIME standard. The MIME standard allows in simple text oriented mails an alternate representation of the same content (e.g. as text and as html), or it allows to split a message into multiple parts which may be encoded. It is important to note that MIME encoding is only effective in the body part of a mail.

S/MIME as described in [58] extends this standard with the possibility to encrypt mail content or to sign it. Practically this is achieved by either putting the encrypted part, or the signature into an attachment. It is important to know, that this method leaks significant parts of the data.

As the mail travels directly from sender to recipient both involved parties are revealed. Neither message subject nor message size or frequency are hidden. This method does offer limited protection when assuming an adverser with interest in the message content only. It does not protect from the kind of adverser in our case.

The trust model is based on a centralistic approach involving generally trusted root certification authorities.

5.10.28. PGP/MIME

Exactly as S/MIME PGP[57] builds upon the base of MIME. Although the trust model in PGP is peer based. The encryption technology does not significantly differ (as seen from the security model).

A good thing to learn from PGP is that there are peer based approaches offering limited possibilities for trust. The trust in PGP is based on the peer review of users. This peer review may give an idea of how well verified the key of a user is.

5.10.29. XMMP



5.11. Proof of work

Proof of work is one possibility to limit resource exhaustion on locally controlled resources. Traditional proofs are either CPU- or memory-bound. This means that they have to proof that they assigned a certain amount of their own CPU time or memory bandwidth to a problem posed by the receiving node.

In [3] is a good summary of proposed proof of work methods. Although they are used there for the defence of DDoS-attacks (Distributed Denial of Service) they might as well be used for defence against misuse for UBE and (D)DoS of the Vortex system. The list has been shortened with irrelevant algorithms for this work and extended with newer research in that field.

In our case we are looking for a proof which imposes ideally the same amount of work to an attacker and a valid sender. Since an attacker need a lot more resources than a normal sender the amount of work should be for him unbearable. A normal sender on the other hand should be able to cover the load imposed by the system easily.

5.11.1. CPU-Bound Proof of work

CPU bound proof of work tries to assign a task to a request. By presenting a result the sender proofs that he solved a puzzle. Normally these puzzles may only be solved by brute force.

5.11.1.1. Hash based puzzle by Juels and Brainard

The hash puzzle by Juels and Brainard in [41] works as follows:

• The requester requests an operation.

- The service provider sends a block of data back with a known number of missing bits at the end and a cryptographic hash of the original block (including the missing bits)
- The requester then brute forces the missing bits until he finds the correct bit sequence to complete the hash puzzle and sends it to the service provider.

This puzzle has several downsides. One of the biggest downsides is that the puzzle may be solved by using multiple instances in parallel. This allows a specialised adverser to build an efficient infrastructure for solving this kind of puzzle.

5.11.1.2. Hash based puzzle by Aura, Nikander and Leiwo

The hash based puzzle by Aura, Nikander, and Leiwo in [7] is an improved variant of [41]. It works as follows:

- · The requester requests an operation.
- The service provider sends a nonce block N_{sp} to the requester and a number k (this number represents the difficulty).
- The requester chooses a nonce N_r .
- The requester brute forces puzzle solution by solving $hash(identity_r, N_{sp}, N_r, puzzle solution) = hashValueStartingWithKBitsOfZeroes.$
- The requester sends N_r and X it to the service provider.

The downsides of this puzzles are that it may be calculated in parallel. This allows a specialised adverser to build an efficient infrastructure for solving this kind of puzzle. Furthermore the client side nonce N_r must be stored as long as the server side nonce N_{sp} is not regenerated in order to avoid replay attacks.

5.11.1.3. Modified Repeated Squaring Puzzle

Jeckmans proposed in [39] a Squaring hash puzzle. The algorithm is described as follows:

- $Setup(\ell)$: the sever generates a new public parameter sp with length ℓ bits using a (pseudo)random number generator. It then selects two random large primes p, q and creates $n=p\times q$ out of this. The server also selects a difficulty for the puzzles, k. The algorithm then outputs $mk=2^k \mod \phi(n)$ and params=k, sp, n.
- PuzzleGen(mk, req): $puz = \emptyset$ and $info = \emptyset$.
- PuzzleSol(puz): $g = h(sp, id_C)$, $sol = g^{2^k} \mod n$.
- PuzzleVer(info, mk, sol): this algorithm computes the generator, $g = h(sp, id_C)$. The solution is then verified $sol = ?g^{2^k \mod \phi(n) mod n}$.

• $BatchVer(info, mk, sol_i(1 \le i \le m))$: assume that the server has stored m solutions to check, $sol_i, \ 1 \le i \le m$. Compute the corresponding generators $g_i = h(sp, id_{C_i}), \ 1 \le i \le m$. These solutions are then verified with batch verification using Equation $(\prod_{i=1}^m g_i)^{2^k} \mod n = ? \prod_{i=1}^m sol_i \mod n$.

This puzzle is a typical CPU bound puzzle compensating a lot of the drawbacks of [7] and [41] mentioned in the sections before. First it offers a potential verification in batches under the assumption that all solutions within the batch are correct. Secondly it is non-parallelizable. There is very little information to be stored on the server side and non of the information has a lifetime which is longer than the puzzle.

5.11.1.4. Hinted Hash Puzzle

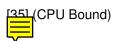
In [28] the authors Feng, Kaiser, and Luu proposed a protocol and is closely related to [7]. The protocol itself is working as follows:

- The requester requests an operation and includes a nonce N_c .
- The service provider sends a chosen puzzle P and the hash answer $h(A,N_s)$ to the requester.
- The requester brute forces *A*.
- The requester sends A to the service provider.

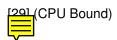
In the original protocols hashes and nonces are resent in order to verify if the requests do still match the originally sent data. As they have no impacts on the mathematical side of the operation they have been eliminated in this description.

From today's view this protocol is however not very secure. Solutions may be searched in parallel and the protocol is susceptible to replay attacks as found result A is replayed over the course of time to reauthenticate

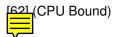
5.11.1.5. Chained Hash Puzzle



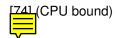
5.11.1.6. Targeted Hash Puzzle



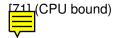
5.11.1.7. Repeated Squaring Puzzle



5.11.1.8. Discrete Logarithm Puzzle

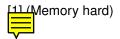


5.11.1.9. Subset sum puzzle

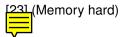


5.11.2. Memory-Bound Proof of work

5.11.2.1. Moderately hard, memory-bound functions



5.11.2.2. Memory bound puzzle based on pattern databases



5.11.3. Summary for Proof of Work Algorithms



5.12. Known Attacks

In the following sections we emphasize on possible attacks to an anonymity preserving protocols. In the following sections we describe classes of attacks. These attacks may be used to attack the anonymity of any entity involved in the message channel. In a later stage we test the protocol for immunity against these classes of attacks.

5.12.1. Broken Encryption Algorithms

Encryption algorithms may become broken at any time. This either to new findings in attacking them, by more resources being available to an adverser, or by new technologies allowing new kind of attacks. A good protocol must be able to react to such threads in a timely manor. This reaction should not rely on

a required update of the infrastructure. The grade of 5.12.2.1. Probing Attacks security should solely be controlled by the users.

We cannot do a lot for attacks of this kind to happen. However – we might introduce a choice of algorithms and key sizes to give the user a choice in the degree of security he wants to have.

5.12.2. Attacks Targeting Anonymity

All attacks targeting users anonymity is a main focus of this work. Many informations may be leaked and the main goal should therefore rely on the principles established in security.

Prevent an attack

This can only be done for attacks which are already known and may not be realistic in all cases. In our protocol we have strict boundaries defined. A node under attack should at any time of a valid protocol usage (this excepts bandwidth depletion attacks) be able to block malicious identities. Since establishing new identities is costly an attacker should always require far more resources than the defender.

· Minimize attack surface This part of the attack prevention is included by

design in the protocol.

· Redirect an attack

Although this is not done by the implementation it is possible to handle suspected malicious nodes differently.

Control damage

For us this means leaving as little information about identities or meta information as possible on untrusted infrastructures. If we leave traces (i.e. message flows, or accounting information) they should have the least possible information content and should expire within a reasonable amount of time.

· Discover an attack

The protocol is designed in such a way that discovering attacks (such as a query attack) may be done. However – we consider active attacks just as part of the ordinary message flow as an immediate result.

· Recover from an attack

An attack does always impose a load onto a systems resources regardless of its success. It is important that a system recovers almost immediately from an attack and is not covered in a non or only partial functional state either temporarily or permanently.

In the following subsections we list a couple of attack classes which have been used against systems listed in 5.10 or the respective academic works. We list the counter measures which have been taken to deflect these attacks.

Identifying a node by probingand check their reaction is commonly done when fingerprinting a service. As a node is participating in a network and relaying messages probing may not be evaded. However, it may be made costly for an adverser to do systematic probing. This should be taken into account.

One strategy to avoid would be to put high costs onto clear text requests in such a way that a clear text request may have a long reply time (e.g. up to one day). An early retry of the same identity would lead to automatic blacklisting. This is however an insufficient strategy as a huge adverser may have lots identities in stock. Requesting a particularly long key as an plain text identity does not make sense either as these as well may be kept in stock. We may however force a plaintext request to have a hash following certain rules. We may for example put in a requirement that the first four bytes of the hash of a header block translates to the first four characters of the receiving address

5.12.2.2. Hotspot Attacks



5.12.2.3. Message Tagging and Tracing



5.12.2.4. Side Channel Attacks



5.12.2.5. Timing Attacks



5.12.2.6. Sizing Attacks



5.12.2.7. Bugging Attacks

Numerous attacks are available through bugging of a protocol. In this chapter we outline some of the possibilities and how they may be countered:

Bugging through certificate or identity lookup:

Almost all kind of proof of identities, such as certificates, offer some kind of revocation facility. While this is a perfect desirable property of these infrastructures they offer a flaw. Since the location of this revocation information is typically embedded in the proof of identity an evil attacker might use a falsified proof of sage. As we may not govern the type of contained identity with a recording revocation point.

There are multiple possibilities to counter such an attack. The easiest one is to do no verification at all. This is however not desirable from the security point of view.

Another possibility is to only verify trusted proof of identities. By doing so the only attacker could be someone having access to a trusted source of proof of identities.

A third possibility is to relay the request to an other host either by using an anonymity structure such as Tor or by using its own infrastructure. Using Tor would violate the "Zero Trust" principle we are aiming for. Furthermore this measure would only conceal the source of the verification. It would not hide the fact that the message is being processed.

A fourth and most promising technology would be to force the sender of the certificate to include a "proof of non revocation". This could be a timestamped and signed partial CRL. Such a mandatory proof of nonrevocation would allow a node to verify the validity of a certificate without being forced to disclose itself by doing a verification. On the downside has to be mentioned that including a proof of non-revocation involves the requirement to accept a certain amount of caching time to be accepted. This allowed caching time reduces the value of the proof as it may be expired in the mean time. It is recommended to keep the maximum cache time as low as 1d in order to avoid that revoked certificates may be used.

Bugging through DNS traffic: A widely common protocol in the internet is DNS. Almost all network related programs use it without thinking. Normally is the usage of such a protocol not a minor issue since the resolution of a lookup usually done by an ISP. In the case of a small ISP this might however already become a problem.

The bugging in general attack works as follows: We include a unique DNS name to be resolved by a recipient. This can be done most easily by including an external resource such as an image. A recipient will process this resource and might therefore deliver information about the frequency of reading, or the type of client.

It must be taken into account that the transport layer will always do DNS lookups and that we may not avoid this attack completely. We may however minimise the possibilities of this attack.

Bugging through external resources: An easy attack is always to include external resources into a message and wait until they are fetched. In order to avoid this kind of attack plain text or other self contained formats should be used when sending a mesmessage we can make at least recomendations concering its structure

5.12.3. Denial of Service Attacks

5.12.3.1. Censorship

Where as traditional censorship is widely regarded as selective information filtering and alteration a very repressive censorship can even include denial of information flows in general. Any anonymity system not offering the possibility to hide in legitimate information flows is therefore not censorship resistant.

5.12.3.2. Credibility Attack

Another type of DoS attack is the credibility attack. While not necessarily a technical attack it is very effective. A system not having a sufficiently big user base is offering thus a bad level of anonymity due to the fact that the anonymity set is too small or the traffic concealing message flow is insufficient.

In a credibility attack a systems reputation is degraded in such a way that the system is no longer used. This may be achieved in serveral ways. This is usually done by reducing the reputation of a system.

This may be achieved in several ways. Examples:

- · Disrupt functionality of a system. This may be done by blocking ports the messaging protocol uses or blocking selectively messages. It may be done by removing publicly known participants from the internet either by law or by threatening.
- Publicly dispute the effectiveness of a system. This is a very effective way to destroy a system. People are not willing to use a system which is compromised if the main goal of using the system is avoiding being observed.
- Reduce the effectiveness of a system. A system may be considerably being loaded by an adverser to decrease the positive reception of the system. He may further use the system to send UBE to reduce the overall experience when using the system. Another way of reducing the effectiveness is to misuse the system for bad purposes and making them public.
- · Dispute the credibility of the system founders. Another way of reducing credibility of a system is to undermine its creators. If - for example - people believe that a founders interest was to create a honey pot (e.g. because he is working for a potential state sponsored adverser) for personal secrets they will not be willing to use it.
- · Dispute the credibility of the infrastructure. If an infrastructure is known or suspected to be

run by a potential adverser peoples willingness to believe into such a system might be drastically reduced.

6. Applied Methodes

Based in the findings of the previous chapter we used the following methodology in order to find a solution:

- 1. Identify problem hotspots for a new protocol.
- 2. Design a protocol which addresses the previously identified hotspots.
- 3. Build a protocol prototype.
- Analyse the protocol for weaknesses using attack schemes.
 - a) Tagging/Bugging attacks
 - b) Tracing attacks

6.1. Problem Hotspots

Starting off from the previous research we identified several hotspots which have to be taken care off. The following sections list identified problems and the possible countermeasures which have not been broken in the past.

6.1.1. Zero Trust Philosophy

One main disadvantage of almost any system listed in section 5.10 is that a trust (unlimited or limited) has been put into the infrastructure. In example when using Tor you need to trust the directory servers. Control over the directory servers might give an attacker the possibility to redirect a connection to controlled entry and exit nodes which would then break anonymity. In general control of entry and exit nodes makes a system vulnerable.

To avoid this problem we decided to apply a zero trust model. We do not trust any platform except for the sending and receiving computer. We assume that all other devices are compromised and do create detailed logs about what they are doing. We furthermore assume that traffic on the network layer is observed and recorded at any time. This philosophy creates very hard to meet goals. But by assuming so we prevent the system from leaking information through side channels.

RQ1 (Zero Trust): No infrastructure should be trusted unless it is the senders or the recipients infrastructure.

6.1.2. Information leakage

Information of messages or their meta data should not be leaked. This means that in a normal message flow any hop should be a valid sender, a valid recipient, or a valid mix this implies some kind of peer-to-peer (P2P) design.

6.1.2.1. P2P design

A main problem of the P2P design is that usually port forwarding or a central infrastructure is required. Technologies such as "hole punching" and "hairpin translation" usually require central infrastructures to support at least the connection and may be depending on the client infrastructure being used fragile or ineffective. To avoid these problems we decided to rely on traditional centralistic transport infrastructures. As the proof of concept we decided to use SMTP.

The approach supports however even mixing transport media. This makes it harder for an attacker to trace a message as the message flow may go through any suitable transport protocol at any time of message transfer.

RQ2 (P2P): Mixes and peers must be undistinguishable.

6.1.2.2. Decoy traffic generation

In order to create decoy traffic in an untrusted way we need means to increase an decrease messages in size without knowledge of the routing node. An easy approach would be to create decoy traffic in the initial message. This would however create a pattern of decreasing message size in the net. To avoid this we introduced a set of operations to be applied to the original message. The operations are done in such a way that a mixer is unable to tell whether the message size or decrease results in decoy traffic generation/removal or not.

The main message operations are:

- · Split a message in two parts.
- · Merge two messages.
- Fork off a block xor'ed (create a new random block of the received message size, then use a bitwise xor of these blocks to create a new block. Send any or all of these blocks further).
- · Join two blocks xor'ed (take two blocks and xor

them together)

At this point we could have used homomorphic encryption instead of xor. This would however add a lot of complexity to the algorithm with no obvious gain. The bitwise xor however allows a cheap fast operation and it allows to split and join information at will. Furthermore the implications of this operation are well known and researched.

6.1.2.3. Message tagging or bugging protection

It is important to the protocol that any operation at any point of the protocol handling which is not foreseen should result in the failure of message transport. This makes the protocol very fragile but it prevents mixes from introducing tags which may be followed throughout the system.

In our approach we give a single mix the full control over the message hiding/blending layer. This means that every mix decides for the content there. However – This data is ephemeral and will (or may) be removed in the next node. The data received by a mix may be used to generate a "pseudo reply" on the blending layer to transport any other message (related or unrelated) back to the sending node. So tagging on this layer is worthless.

The reason for not giving control over the behaviour to this layer to the sender of the message is simple. By giving him control over it we would allow him to use the information provided here as the main medium. As an immediate result the system would suitable to blackmail any user of the world. It furthermore would create unintentional "exit nodes" to the system which might oppose further legal threads for participants.

RQ3 (untagable): The message should be untagable (neither by a sender, or by an intermediate party such as a mixer).

RQ4 (unbugable): The message should be unbugable (neither by a sender, or by an intermediate party such as a mixer).

6.1.2.4. Message replay protection

Message reply protection is crucial for such a system. With the ability to replay a message an adverser may "highlight" a message flow as it would always generate the same traffic pattern. So there needs to be a reply pattern protecting the protocol from message replay. As we do have MURBs in our protocol this is a problem. A MURB is by design replayable. We therefore need a possibility for the original sender using a MURB to make messages distinguishable which may not be used by an adverser.

RQ5 (replay): A message must not be replayable

It should be able to increase and shrink in size or all messages must have uniform size. Decoy traffic should not be distinguishable from true message traffic.

6.1.2.5. No Dedicated Infrastructure Philosophy

There should be no infrastructure dedicated for the operation of the solution. This avoids single point of failures as well as the possibility for an adverser to shut down this infrastructure to disrupt the operation of the system as a whole. This requirement is already covered implicitly in RQ1 (Zero Trust).

6.1.3. Accounting

The infrastructure must not be misused as UBE sending infrastructure. This implies that sending messages is connected to some kind of "cost". "Costs" must be connected to some kind of identity to allow accounting. Linking to a a global identity would allow to assign traffic to a real world user. Therefore the protocol must allow to create ephemeral local identities not linked to a real identity.

RQ6 (accounting): The system must be able to do accounting without being linked to a real identity.

6.1.4. Anonymisation

The system must allow to anonymise message source and message destination at any point. It should not be visible to the infrastructure protocol whether a message has reached its destination or not.

RQ7 (anonymisation): System must be able to anonymise sender and recipient at any point of the transport layer and at any point of mixing unless it is the sender or the recipient itself.

6.1.5. Initial Bootstraping

The system must allow to boot strap from a zero knowledge or near zero knowledge point. Starting off from this point the protocol must be able to extend the network on its own.

RQ8 (bootstrapping): The system must allow to boot strap from a zero knowledge or near zero knowledge point and extend the network on its own.

6.1.6. Cypher selection

In This Protocol a lot of encryption and hashing algorithms have to be used. This Choice should be explained.

First of all we need a subset of encryption algorithms all implementations may rely on. Defining such a subset guarantees interoperability between all nodes regardless of their origins.

Secondly we need to have a spectrum of algorithm in such a manor that it may be (a) enlarged if necesary and (b) there is an alternative if an algorithm is broken (so that algorithms may be withdrawn if required without affecting the function in general).

And third due to the onion like design described in this document asymmetric encryption should be avoided in favour of symmetric encryption to minimize losses due to the key length and the generally higher CPU load opposed by asymmetric keys.

If the algorithm is generally bound to specific key sizes (due to S-Boxes or similar constructs) the key size is incorporated into the definition. If not the key size is handled as parameter.

The key sizes have been chosen in such a manor that the key types form tuples of approximately equal strength. The support of Camelia192 and Aes192 has been defined as optional. But as they are wildly common in implementations they have already been standardized as they build a possibility to step up security in future.

Having these criteria for choice we chose to use the following keys and key sizes:

- Symetric
 - AES (key size: 128, 192, 256)
 - Camellia (key size: 128, 192, 256); optional
- · Asymetric
 - RSA (key size: 2048, 4096, 8192)
 - Named Elliptic Curves
 - * secp384r1
 - * sect409k1
 - * secp521r1
- Hashing
 - sha384
 - sha512
 - tiger192; optional

Within the implementation we assigned algorithms to a security strength level:

- LOW AES128, RSA1024
- MEDIUM

AES192, RSA2048, ECC secp384r1

- HIGH RSA4096, ECC sect409k1, sha384
- QUANTUM AES256, RSA8192, ECC secp521r1, sha512

This allows to categorize the used algorithms to a strength. This list however should only serve the purpose of selecting algorithms for people without cryptological know how.

RQ9 (encryption variety): The system must be able to use multiple symmetric, asymmetric, and hashing algorithms.

6.1.7. Usability

The system must be usable without cryptographic know-how and with well known tools. This is necessary to accept the system broadly and makes it easy to use for peoples already communicating.

RQ10 (easy handleable): The system must be usable without cryptographic know-how and with well known tools.

6.2. Protocol outline

The protocol itself is independently from the transport layer specified. We emphasize in this section to the general building blocks, the cryptographic structure, and the general protocol attributes. In Section ?? we will then further elaborate the protocols inner structure.

The protocol is built on multiple layers. On the logic side the protocol is split into two parts:

1. Transport Layer

This Layer is provided by normal internet infrastructures. The main goal is to hide or blend our protocol into ordinary traffic within that layer.

2. Blending and subsequent layers

These layers may be provided by any user of the internet. Since these layers may be mixes only or valid endpoints they may or may not be publicly known. In a first implementation we build this system as a normal Java application. The main goal is to compile afterwards either native code and run it on a SoC like infrastructure such as a RaspberryPi or port it to an android device.

We may further split these layers into

a) Blending layer
This layer takes messages and creates

transport layer conformant messages. In an ideal case the messages generated by this layer are undistinguishable from the normal message traffic and the embedded message is only visible for the receiving node.

b) Routing layer

The routing layer disassembles and reassembles messages. This operation guarantees that messages are generated in such a way that decoy traffic is not differentiable from non decoy traffic.

c) Accounting layer

The accounting layer has three jobs. First he has to authorise the message processing after decrypting the header block. Secondly he handles all header request blocks and the reply blocks. And third, it keeps track of the accounting in regard to the sent messages.

6.2.1. Transport Layer

For our test we used a custom transport layer allowing us to monitor all traffic easily, and build structures in a very flexible way. This can be done with a minimum amount of work for setup and deployment. It furthermore works across multiple hosts in a broadcast domain. The API may be used to support almost any kind of transport layer.

We identified in the previous section the following protocols as suitable for transport:

- SMTP
- XMPP

For a prototype we will implement a SMTP-Transport agent.

6.2.2. Blending Layer

The blending layer is taking care of multiple problems:

- It is translating the message block into a suitable format for transport
 - This includes jobs such as embedding a block as encoded text, as a binary attachment, or hide it within am message using steganography.
- Extract incomming blocks Identify incomming messages containing a possible block and extract it from the message.
- Do housekeeping on the storage layer of the transport protocol
 It may be required that messages are deleted from time to time in order to stay below sizing quotas of an account.

We define the blending layer to work as follows when receiving messages:

- 1. Log arrival time (in UTC) on the transport layer.
- 2. Extract possible blocks.
- 3. Apply decryption on a suspected header block .
- Identify header block as valid by querying the accounting.
- 5. Extract and decrypt subsequent blocks.
- 6. Pass extracted blocks and information to the routing layer.

We define the blending layer to work as follows for sending messages:

- 1. Assemble message as passed on by the routing layer.
- 2. Using the blending method specified in the routing block build an empty message.
- 3. Create a message decoy content.
- 4. Send the Message to the appropriate recipient using the transport layer protocol.

There is no specification on the housekeeping part of the blending layer as this part is specific to the requirements of the account owner. We do however recommend to handle messages exactly as if the messages would be handled on a account handled by a human.

6.2.3. Routing Layer

The routing layer receives the message blocks in a decrypted and authorised form from the blending layer. and processes them as follows:

- Build structure representing the block building and the appropriate block IDs.
- Schedule all Routing blocks for processing in an priority queue.
- Authorise all routing blocks ready for processing with the calculated block sizes.
- · Process blocks.
- Send prepared building blocks to the Blending layer.

6.2.3.1. Block Structure

The main block structure is defined as a sequence of blocks.

The block sequence starts with a header containing a symmetric key encrypted with public key of the current node and a header block containing the immediate details to decrypt the subsequent blocks (if any).

The header block is followed by a routing block. This block contains information required for subsequent routing. According to this block currently valid data

blocks may be assembled and sent to a different location.

The next block is the routing log block. This block protocols the routing information of a message and is somewhat similar to an onionized variant of the received headers in SMTP.

The final sequence of blocks are data blocks. They contain the actual data or decoy traffic.

6.2.3.2. MURBs

The protocol allows to use MURBs. This enables a user to send a limited amount of times a message to an anonymous receiver without having any knowledge about its name or the location or infrastructure he is using.

A MURB in our term is a completely prepared routing instruction built by the recipient of a message. The sender has only the routing blocks and the instructions to assemble the initial message. It has no knowledge about the message path except for the first message hops.

As a MURB is a routing block it generates the same pattern on the network each time it is used. In order to avoid statistical visibility we need to limit the number of uses per MURB. As a maximum number of usages the number 127 has been chosen. This number allows to be used for automated messages. A minute pattern would disappear latest after 2 hours and an hourly pattern after 5 days.

6.3. Protocol design

In this section we emphasize on the protocol blocks. These blocks are extracted from the blending layer and passed to the routing layer.

6.3.1. Header block

The header block contains the identity and should contain all information required to decide whether subsequent blocks of the message should be handled.

The header block contains the following data:

- A symmetric header key (header key)
 This key is encrypted with the receiving identities public key. This key guarantees an efficient handling of the header data. As the number of bytes in the header is limited a receiving node may assign all subsequent work to a known identity or discard it
- An identity block (identityBlock)
 This block contains a number of data which reflects the identity of the sender and the use of this (and subsequent blocks).

- sending ephemeral identity public key (identityKey)
- serial
- maximum number of replays for the serial for this identity
- validity period for this block (in seconds)
- Symmetric decryption key for subsequent blocks
- Chain secret for the forwarding block
 If specified the specified secret should be named in all subsequent blocks.
- Protocol requests to this node
- Identifier and padding for proof of work
- An identity signature (identitySignature)
 Contains a signed hash (hash type is specified in identityBlock.hash) with the senders private key.

6.3.1.1. Ephemeral Identity

The identity in this header block is an ephemeral identity. It exists for a limited amount of time (recommended <90d). Creating a new ephemeral identity is done with an identity request. This identity is mapped to all accounting figures.

6.3.1.2. Requests

Requests are always embedded in a header block. All requests are answered with a provided MURB (which is recommended to have a maximum replay value of 1).

There are several header requests defined:

newIdentity request: This request may be answered with either a reject or a puzzle which is required to solve. Solving the puzzle results in the creation of the identity on the node. Identities may be rejected by the node for various reasons:

- The node is not accepting newldentity requests
- The identity is already taken.
- The identity is not strong enough (should be a longer key).
- The used encryption scheme is not supported by the node.

If an identity is rejected the request may not be replayed by the same identity again. A sending party must generate a new identity for a new request.

This request should be by far the most expensive request. It must at any time be more expensive to request a new identity compared to raise the quota of an existing one.

queryPeer request: A peer request is a request for publicly known Vortex nodes. This request does offer the possibillity of harvesting the Vortex network. To counter this the following limmitations should apply:

- · The request should be very costly
- Only nodes avertising themselfes as public are disclosed.
- Only one or two nodes should be disclosed upon request.
- The number of requests should be limmited per identity.
- A node should always pick random nodes out of a 5% pool of known Vortex addresses.

These measures limit the effectivity of harvesting attacks while giving a normal node the possibility of bootstrapping itself.

queryCapabillity request: This request is the only request answered as a clear text request. To minimize probing this request should be only answered if the node owner agrees. The reply contains the following information:

- · Vortex identities (not encoded)
- Supported Vortex transports including blending specification.
- Maximum quotas.

Minimum identity sizes.

messageQuota request: This request raises the number of routing blocks which may be processed for an identity. A node may reject this request depending on the load of the node, personal preferences, or because this identity causes too much traffic.

It is normally answered for all valid identities only. The node may answer it for recently expired identities. It is however not recommended to send a reply to an unknown identity as this behaviour might be used for probing of a node.

transferQuota request: This request raises the number of bytes which may be transferred for an identity. A node may reject this request depending on the load of the node, personal preferences, or because this identity causes too much traffic.

It is normally answered for all valid identities only. The node may answer it for recently expired identities. It is however not recommended to send a reply to an unknown identity as this behaviour might be used for probing of a node.

queryQuota request: This request instructs the node to send information about the given identity.

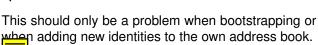
It is normally answered for all valid identities only. The node may answer it for recently expired identities. It is however not recommended to send a reply to an unknown identity as this behaviour might be used for probing of a node.

6.3.2. Request Replies

Message replies are encoded as an ASN.1 message in a data block. Unlike normal data blocks these messages are not accounted in quotas. It is however up to the node to decide there it wants to answer a request or not.

6.3.2.1. Clear Text Requests

It is up to the decision of the node whether it wants to answer a clear text request or not. Recommended for this behaviour is to discard plain text requests. In order to make the public key of the receiving entity available it is recommended to publish key on a PGP key server.



6.3.2.2. Requests



6.3.2.3. Replys



6.3.3. Main block



6.3.3.1. Routing Blocks



6.3.3.2. Routing Log Block



6.3.3.3. Reply Block

6.3.3.4. payload Block



6.3.4. Accounting



6.4. Protocol handling



6.4.1. Received Block Processing



6.4.2. Transmission Block Processing



6.5. Protocol Analysis



Part II.

Results

To verify the hypothesis made in this paper, and to analyse properties of the protocol in a real world scenario a library was implemented in Java which was capable of handling all message packets and the routing stack as a whole. The following paragraphs describe the protocol developed in general as a generic approach. Appendix IV gives the full ASN.1 representation of the protocol.

It is important to notice that ASN.1 has no mean to express encrypted structures. Due to this fact we defined all encrypted fields as OCTET STRING.

The protocol is defined int the ASN.1 to support onionized information in an unencrypted form. This is meant for debugging purposes only. At no point should this possibility be used in a production environment.

The protocol described in the next chapter is independent from routing. We built a blending layer for SMTP. Layers for other protocols such as XMMP may be built similarly. The protocol may be extended by adding blending layers and their addressing schemes.

6.6. Vortex Client

We did not create a Vortex client for sending messages. Instead we used a standard Thunderbird email client pointing to a local SMTP and IMAP Server provided by Vortex. On the SMTP side Vortex does encapsulate where possible mails into a Vortex message and builds automated route to the recipient. The SMTP part of vortex may be used to encapsulate automatically all messages with a known Vortex identity into a vortex message. On the IMAP side it merges a local Vortex message store with the standard Email repository building a combined view.

Using Vortex like this offers us the advantages of a known client with the anonymity Vortex offers.

This has certain downsides. At the moment the vortex client has only a local store this makes it impossible to handle multiple simulatneously connected clients to use Vortex. This is however just a lack of the current implementation and not of the protocol itself as we may safely use an IMAP storage for storing vortex mails centrally.

6.7. Vortex Addresses

A Vortex address is built as follows: vortexAddress = < transport > < address > ! < publicKey >

To allow storage of Vortex addresses sin standard messaging programs such as Outlook or Thunderbird. We define an alternate representation encodedVortexAddress = base64(vortexAddress)@localhost.

The suffix "@localhost" makes sure that a mes-

sage intended for Vortex is not routed by any non-participating server.

The main downside of vortex addresses are that they are no longer readable by a human. The main reason for this is the public key which is required. We may abstract the further by allowing clear text requests on the main email address for the public key. Such requests must then be answered by the vortex account with the valid vortex address.

6.7.1. Vortex Accounts

By definition any transport layer address may represent a Vortex identity. This fact may make people believe that their current email or jabber address is suitable as Vortex address. This is technically perfectly true, but should not be done for the following reasons:

- If an address is identified as a vortex address it may be blocked (directly or indirectly) by an adverser.
- If a vortex node is malfunctioning non-vortex messages should remain unaffected. This is more likely to happen if non-Vortex messages are kept in a separate account.
- If a user wants no longer to maintain its Vortex address (hopfully there will be a better technology in future) he just may give up his Vortex accounts.
 If he would have been using his normal mail account for vortex he would receive mixing messages which he has to filter.

6.7.2. Vortex node types

6.7.2.1. Public vortex node

Public nodes are nodes



6.7.2.2. Stealth vortex node

This node does not answer any clear text requests. As an immediate result the node is only usable by other nodes knowing the public key of this node. The node is therefore on a know secret base only reachable.

6.7.2.3. Hidden vortex node

A hidden node is a special form to a stealth node it has a set of preset identities. Only these entities are processed. This behaveour has certain drawbacks. An identity may not be changed. As an immediate result traffic may become a pseudonymity. To counter this effect at least partially we may use the same local identity for multiple senders. As an immediate result

the sender is only one of all senders knowing the private key of an identity.

7. MessageVortex - Transport Independent Messaging anonymous to 3rd Parties

This approach is different from all approaches discussed previously. Unlike them we put complete distrust into the infrastructure being used. Furthermore we do not rely on a custom server infrastructure in the internet. Instead we take advantage of the availability of internet connected devices such as internet connected mobile phones, tablets, or even commonly available SoC such as RaspberryPi or similar. It is still very hard to maintain a server in the internet and considering the vastly growing amount of automated attack carried out against internet connected servers it is not advisable or realistic to assume that a future user of this system owns either a server or connects to a service which is offering explicitly anonymizing services. These infrastructures would be suspectible to monitoring or even banning. Instead we take a different approach.

We use common messaging protocols as transport layers and connect to them using the respective client protocols. The actual mixes are operated by the users on their "always connected" devices. It goes without saying that such a system is far less reliable than a traditionally run server as this hardware is typically cheap and normally connected to the internet using a bandwidth shared media.

The basic idea is that a client generates all traffic (including decoy or dummy traffic) by itself. It defines the routes a message takes through the mixes and decides which targets are receiving dummy traffic at the same time. In such a system even when possessing all the nodes routing the traffic (without the endpoints) an anonymity set of k (whereas the size of k is defined by the sender) is guaranteed.

As decoy traffic is generated with the same operations as the true content is split it is impossible for an adverser running a node to determine wether he is generation poise or actually processing the true message.

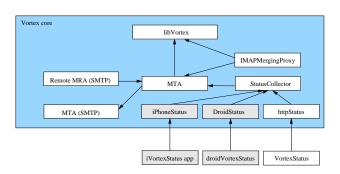


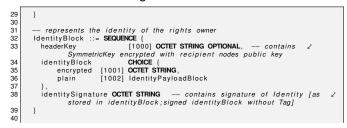
Figure 7.1.: Overview of the Vortex modules FiXme Fatal: replace image with up to date representation; show implemented and not implemented parts; Maybe make it two column wide



Figure 7.2.: flow diagram showing message processing

7.2. Block Structure

Listing 7.1: Header Block



7.1. Protocol Implementation



42 43 44 45 46 47 48 serial identifying this block rial INTEGER (0..maxSerial), -- number of times this block may be replayed (Tuple is identityKey, 2 serial while maxReplays 49 50 51 52 INTEGER (0..maxNumberOfReplays), -- subsequent Blocks are not processed before valid time. -- Host may reject too long retention. Recomended validity support >=1 2 Mt. 53 54 55 UsagePeriod, -- represents the chained secret which has to be found in subsequent blocks prevents reassembly attack forwardSecret ChainSecret contains SymmetricKey encrypted with private key of identityKey encryption is done as proof of identity (identity hijack protection decryptionKey OCIET STRING, contains (encrypted) DER encoded ASN1BitString with key representation 62 63 64 65 66 67 $-\!\!\!\!-$ contains the MAC-Algorithm used for signing hash $\mathsf{MacAlgorithm}$, contains administrative requests such as quota requests quests SEQUENCE (SIZE (0...maxNumberOfRequests)) OF \nearrow HeaderRequest , — padding and identitifier required to solve the cryptopuzzle identifier [2001] INTEGER (0..maxSerial) OPTIONAL, padding [2002] OCTET STRING OPTIONAL — This is for solving padding [2002, crypto puzzles

7.6.1. Ephemeral identities



7.6.2. Timing of messages



7.6.3. Building Diagnostic Paths



7.6.3.1. Implicit Diagnostic



7.6.3.2. Automatic Explicit Diagnostic



7.3. Accounting

In table 7.1 we show under what circumstances a reply to a header request should be sent. The capitalised words MAY, MUST, SHOULD and SHOULD NOT are used as defined in RFC2119[14].

7.6.3.3. On-Demand Explicit Diagnostic



7.4. Blending layer



7.7. Verification of requirements

In the previous sections we identified the following list of requirements:

RQ1 No infrastructure should be trusted unless it is the senders or the recipients infrastructure.

RQ2 Mixes and peers must be undistinguishable.

RQ3 The message should be untagable (neither by a sender, or by an intermediate party such as a mixer).

RQ4 The message should be unbugable (neither by a sender, or by an intermediate party such as a mixer).

RQ5 A message must not be replayable

RQ6 The system must be able to do accounting without being linked to a real identity.

RQ7 System must be able to anonymise sender and recipient at any point of the transport layer and at any point of mixing unless it is the sender or the recipient itself.

RQ8 The system must allow to boot strap from a zero knowledge or near zero knowledge point and extend the network on its own.

RQ9 The system must be able to use multiple symmetric, asymmetric, and hashing algorithms.

RQ10 The system must be usable without cryptographic know-how and with well known tools.

In the following subsections we will iterate through all



7.5. Message Flows



7.6. Considerations for Building Messages

In a worst case scenario we assume that an adverser is controlling most of the network utilized for anonymisation. While this is not necessarily a problem (as pointed out earlier) it allows an adverser to track a message while agents are being used under his control. So for simplicity and as a worst case assumption we always assume that an adverser has perfect knowledge of an associated message flow. This is however a worst case scenario. One missing agent disconnects the whole chain and as messages are not traceable in size.

| Criteria Request | unknown identity; cleartext | unknown identity; encrypted | expired identity; encrypted | known identity; encrypted |
|---------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|---------------------------|
| newIdentity | SHOULD NOT | SHOULD NOT | Invalid (Error) | Invalid (Error) |
| queryPeer | MUST NOT | MUST NOT | MAY | MAY |
| queryCapability | SHOULD | MUST | MUST | MUST |
| messageQuota | MUST NOT | MUST NOT | MAY | MUST |
| transferQuota | MUST NOT | MUST NOT | MAY | MUST |

Table 7.1.: Requests and the applicable criteria for replies

the goal.

RQ1 (Zero Trust): RQ2 (P2P): RQ3 (untagable): RQ4 (unbugable): RQ5 (replay): RQ6 (accounting):

RQ7 (anonymisation): This point is the hardest to proof. We certaindly achieved a high degree of anonymity. No node can tell by observing traffic if a node is a final recipient or just a mix. There are however some weaknesses in the protocol. As the implementation is currently connecting simultaneously to the tru named and the Vortex account the user might be identified by that fact. Using a anonymisation proxy could solve the problem but it would violate the Zero trust principle.

(bootstrapping): (encryption variety): handleable): (easy

requirements and verify to what degree we achieved 7.8. Considerations for Routing Messages

7.8.1. Time of sending

Messages should always be sent timewise nearby other messages. This means that the best moment for sending a message in a ready queue is at a time when sending of other messages is due. However no optimisation should be done to send as many messages as possible at the same time. this would lead to a forseeable behaviour of the routing layer and thus to misusable behaviour.

7.9. Real World Considerations

This approach is heavily dependent of the transport protocol and builds on top a new obfuscating/routing layer. For this system to become a real peer-topeer approach some additional quirks are required. A message-Vortex-Account needs always an active routing handler. This routing handler may be introduced by new server capabilities or by having a device handling the routing from the client side. For this reason we built a RaspberryPi appliance capable of connecting to one (or more) accounts fetching incomming mails, analysing them and reroute them if necessary. Although the system is designed to be run on a RaspberryPi the software might be installed to any Java capable client. The RaspberryPi is just one affordable lightweight device which offers all required capabi-

8. Security Analysis

following In the sections we emphasize on attacks targeting either sender es identification recipient or on participants -

9. Additional Considerations

9.1. Man in the Middle Attacks to Conversations



9.2. Identification of participating account



9.2.1. Identification by content

It is possible to identify a message by content. Assuming that an adverser knows the applied blenderhode he may identify an ASN.1 structure

great care and tremendous costs up until this point it would be careless doing so.

Storing them in a localized and receiving entity controlled storage is definitely a good idea but leaves security considerations like a backup possibly to an end user. This might be better but in effect a questionable decision. There is however a third option. By leaving the message unhandled on the last entity of the MessageVortex chain we may safely backup the data without disclosing the message content. Merging the content then dynamically through a specialized proxy would allow the user tu have a unified view on his without compromising the security.

9.4. Economy of transfer



9.2.2. Identification by Query



9.2.3. Identification by Traffic Type



9.2.4. Identification by Bandwidth



9.2.5. Identification by Behavioural analysis



9.3. Storage of Messages and queues

The storage of messages sent though MessageVortex should be handled with great care. It seems on the first sight a good idea to merge all messages in a globally available storage such as the mail account of the receiving entity. However – In doing so we would discover the message content to the providing party of a mail account. Since we handled the message with

Part III. Discussion



10. Recommendations on using the Vortex Protocol

10.1. Message content

Although it is possible to embed any type of content into a Vortex message great care should be taken as content may allow to disclose a readers identity or location. For this reason only self contained messages should be used (such as plain text messages).

11. Anonymity



11.1. Effects of anonymous communication on behaveour



Part IV. Appendix

ASN.1 representation of the protocol

Listing 1: ASN.1 representation of the protocol

```
- FIXME ADAPT NeoScrypt
      -- encryption: as specified in the key. If not specified default mode is ECB and default padding is PKCS1Padding

    States: Tuple()=Value() [vallidity; allowed operations] {Store}
    Tuple(identity)=Value(messageQuota, transferQuota, sequence of Routingblocks for Error Message Routing) [validity; Requested at creation; may be extended \( \varphi\) upon request] {identityStore}
    Tuple(Identity, Serial)=maxReplays ['valid' from Identity Block; from First Identity Block; may only be reduced] {IdentityReplayStore}

    \label{eq:message-blocks} \begin{array}{ll} \text{Message-Blocks} & \textbf{DEFINITIONS} & \text{EXPLICIT} & \textbf{TAGS} & ::= \\ \textbf{BEGIN} & \\ \end{array}
        -- define constants
maxSerial
maxChunkSize
maxNumberOfReplays
maxNumberOfRequests
maxDurationOfProcessing
maxDurationOfFrocessing
maxDurationOfFrocessing
maxDurationOfFrocessing
                                                                                               startOffset)
                                                  INTEGER ::= 32767
INTEGER ::= 127
-- maximum id of an operation
         maxPayloadBlocks
                                                  INTEGER ::= 127
INTEGER ::= 86400

    maximum number of payload blocks in a message
    maximum number of seconds a proof of non revocation may be old

                        ::= SEQUENCE
                 ge ::= SEQUENCE {
der IdentityBlock,
dks CHOICE {
    encrypted [1101] OCTET STRING, — contains encrypted UnencryptedBlocks structure; Decryption key is in identity block [decryptionKey]
    — it is not allowed to use plain in production environments; This is for testing and analysis only
    plain [1102] UnencryptedBlocks — should not be used except for internal diagnostic purposes
           blocks
        identityBlock
                  encrypted [1001] OCTET STRING,
plain [1002] IdentityPayloadBlock
           identitySignature OCTET STRING — contains signature of Identity [as stored in identityBlock;signed identityBlock without Tag]
        -- serial identifying this block serial INTEGER (0..maxSerial),
                number of times this block may be replayed (Tuple is identityKey,serial while xReplays INTEGER (0..maxNumberOfReplays),

    subsequent Blocks are not processed before valid time.
    Host may reject too long retention. Recomended validity support >=1Mt.
    valid UsagePeriod,

           -- represents the chained secret which has to be found in subsequent blocks
                prevents reassembly attack wardSecret ChainSecret,
           forwardSecret

    contains SymmetricKey encrypted with private key of identityKey
    encryption is done as proof of identity (identity hijack protection)
    decryptionKey
    OCTET STRING, — contains (encrypted) DER encoded ASN1BitString with key representation

                  contains the MAC-Algorithm used for signing
                                         MacAlgorithm .
           -- contains administrative requests such as quota requests requests  {\bf SEQUENCE} \ \ ({\bf SIZE} \ \ ({\bf 0} \ldots {\bf maxNumberOfRequests})) \ \ {\bf OF} \ \ {\bf HeaderRequest} \ \ ,
                padding and identitifier required to solve the cryptopuzzle
entifier [2001] NTEGER (0..maxSerial) OPTIONAL,
dding [2002] OCTET STRING OPTIONAL — This is for solving crypto puzzles
        UnencryptedBlocks ::= SEQUENCE {
— contains routing information (next hop) for the payloads routing [3000] RoutingBlock OPTIONAL,
           — contains encrypted log data of the data traveling
routingLog [3010] RoutingLogBlock OPTIONAL,
               contains replys to header requests (eg. quota and identity handling) ply [3020] ReplyBlock OPTIONAL,
               - contains the actual payload
ayload [3100] SEQUENCE (SIZE (0..maxPayloadBlocks)) OF PayloadChunk
        — represents the building and sending process for the next hop RoutingBlock ::= SEQUENCE \{
           -- contains the next recipient in sequence recipient NodeSpec,
           — contains the period when the payload should be processed — Router might refuse to long queue retention — Recommended support for retention >=!th processTime INTEGER (0..maxDurationOfProcessing),
          -- routing blocks for the next operation
```

```
SEQUENCE (SIZE (0..128)) OF NextHopBlock OPTIONAL,
102
            -- contains the secret of the identity block forwardSecret \, ChainSecret ,
103
104

    contains a routing block which may be used when sending error messages back to the quota owner
    this routing block may be cached for future use
    replyBlock [131] RoutingBlock OPTIONAL,

            — contains information for building replys (when used as MURB ID 1 denotes original message) cascade [300] SEQUENCE(SIZE (0..255)) OF PayloadOperation , replyCascade [301] SEQUENCE(SIZE (0..255)) OF PayloadOperation
112
113
114
115
116
117
          118
119
120
121
122
123
124
                  adOperation ::= CHOICE {
splitPayload [150] SplitPayloadOperation,
mergePayload [200] MergePayloadOperation,
xorMergePayload [250] XorMergePayloadOperation,
encryptPayload [300] EncryptPayloadOperation,
decryptPayload [350] DecryptPayloadOperation,
127
128
129
130
131
132
133
134
135
          PercentSizeType ::= SEQUENCE {
fromPercent
toPercent
REAL (0..100)
REAL (0..100)
136
137
138
139
140
141
          142
143
144
145
146
147
148
149
150
         SizeType ::= SEQUENCE{
                   size CHOICE {
    percent
    absolute
                                            [15001] PercentSizeType,
[15101] AbsoluteSizeType
          SplitPayloadOperation ::= SEQUENCE {
            originalld
firstSize
newFirstId
newSecondId
                                                                   INTEGER (0..maxID),
                                        SizeType,
151
152
153
154
155
156
157
                                                                                INTEGER (1..maxID)
INTEGER (1..maxID)
         MergePayloadOperation ::= SEQUENCE { INTEGER (0..maxID),
                                        INTEGER (0...maxID),
INTEGER (1...maxID)
            originalSecondId
158
159
160
161
162
163
164
          SizeType , INTEGER (1.. maxID)
165
             originalFirstSize
166
167
168
169
170
171
172
         173
174
175
176
177
178
179
         180
          EncryptedRoutingLogBlock ::= OCTET STRING — contains symmetrically encrypted RoutingLogBlock RoutingLogBlock ::= SEQUENCE { routingLog SEQUENCE (SIZE (0..16)) OF RoutingLog , nestedRoutingInformationBlock EncryptedRoutingLogBlock
181
182
183
184
185
186
187
         188
189
190
191
192
193
194
          195
196
197
198
199
200
201
202
203
          IdentityStore ::= SEQUENCE {
   identities SEQUENCE (SIZE (0..4294967295)) OF IdentityStoreBlock
204
205
206
207
208
209
210
          IdentityStoreBlock ::= SEQUENCE
                                          UsagePeriod ,
INTEGER (0..4294967295) ,
INTEGER (0..4294967295) ,
            messageQuota
211
             transferQuota
                                          [1001] Asymmetrickey OPTIONAL, — if omitted this is a node identity
[1002] NodeSpec OPTIONAL, — if ommited own identity key
[1003] SEQUENCE OF Asymmetrickey OPTIONAL, — Contains the identity of the owning node; May be ommited if local node
[1004] SEQUENCE OF RoutingBlock OPTIONAL,
212
             identity
nodeAddress
213
214
215
216
217
            nodeKey
             routingBlocks
         }
218

    contains a node spec of a routing point
    At the moment either smtp:<email> or xmpp:<jabber>
    NodeSpec ::= IA5String

219
```

```
222
223
             ChainSecret ::= INTEGER (0..4294967295)
224
             -- FIXME define requests

HeaderRequest ::= CHOICE {
   identity [0] HeaderRequestIdentity,
   capabilities [1] HeaderRequestCapability,
   messageQuota [2] HeaderRequestIncreaseMessageQuota,
   transferQuota [3] RequestIncreaseTransferQuota,
   quotaQuery [4] HeaderRequestQueryQuota,
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
             ReplyBlock ::= CHOICE {
    identity [0] ReplyIdentity,
    capabilities [1] ReplyCapability,
239
240
             HeaderRequestIdentity ::= SEQUENCE { identity AsymmetricKey, period UsagePeriod,
241
242
243
244
245
246
247
             248
249
250
251
252
253
254
             HeaderRequestQueryQuota ::= SEQUENCE {
255
256
                 identity AsymmetricKey,
257
258
259
260
261
262
             HeaderRequestIncreaseMessageQuota ::= SEQUENCE {
                 identity AsymmetricKey,
messages INTEGER (0..4294967295),
263
264
265
266
267
268
269
270
271
             \begin{array}{lll} \mbox{HeaderRequestCapability} & ::= & \mbox{SEQUENCE} \  \, \{ \\ \mbox{period UsagePeriod} \, , \end{array}
272
273
274
275
276
277
278
             ReplyCapability ::= SEQUENCE {
    cypher
    maxTransferQuota
    supportedProtocol
    SEQUENCE (SIZE (2..256)) OF CypherSpec,
    INTEGER (0..4294967295),
    SEQUENCE OF Protocol,
279
280
281
282
283
284
285
            286
287
288
289
290
291
292
293
             Protocol ::= ENUMERATED { smtp (100), xmmp (110),
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
321
322
323
             ErrorCode ::= ENUMERATED {
                    - System messages
                                                              (2001),
                 ok
transferQuotaStatus (2101),
messageQuotaStatus (2102),
                 — protocol usage failures
transferQuotaExceeded (3001),
messageQuotaExceeded (3002),
identityUnknown (3101),
messageChunkMissing (3201),
messageLifeExpired (3202),
                 -- Mayor host specific errors
hostError (5001),
             — Compatible to PrivateKeyUsagePeriod taken from RFC3280
UsagePeriod ::= SEQUENCE {
    notBefore [0] GeneralizedTime OPTIONAL,
    notAfter [1] GeneralizedTime OPTIONAL
325
326
327
328
329
330
331
332
333
              \begin{array}{lll} A symmetric Algorithm I dentifier & ::= & \textbf{SEQUENCE} & \{ \\ algorithm & Asymmetric Algorithm \\ parameter & Algorithm Parameters & \textbf{OPTIONAL} \\ \end{array} 
334
335
336
337
338
339
340
             MacAlgorithmIdentifier ::= SEQUENCE to MacAlgorithm MacAlgorithm, AlgorithmParameters
341
342
```

```
Symmetric Algorithm :: BAMERATED {

see 192 (1001) -- optional support

see 192 (1001) -- optional support

see 193 (1002) -- optional sup
```

Glossary

adverser FIXME

Agent FIXME

EWS FIXME

IMAP IMAP (currently IMAPv4) is a typical protocol to be used between a Client MRA and a Remote MDA. It has been specified in its current version in [20]. The protocol is capable of fully maintaining a server based message store. This includes the capability of adding, modifying and deleting messages and folders of a mailstore. It does not include however sening mails to other destinations outside the server based store.

Item of Interest (IoI) FIXME

LMTP FIXME

Local Mail Store A Local Mail Store offers a persistent store on a local non volatile memory in which messages are beeing stored. A store may be flat or structured (eg. supports folders). A Local Mail Store may be an authoritative store for mails or a "Cache Only" copy. It is typically not a queue.

mail server admin FIXME

MDA An MDA provides an uniform access to a Local Mail Store.

Remote MDA A Remote MDA is typically supporting a specific access protocol to access the data stored within a Local Mail Store .

Local MDA A Local MDA is typically giving local applications access to a server store. This may be done thru an API, a named socket or similar mechanisms.

MRA A Mail receiving Agent. This agent receives mails from a agent. Depending on the used protocol two subtypes of MRAs are available.

Client MRA A client MRA picks up mails in the server mail storage from a remote MDA. Client MRAs usually connect thru a standard protocol which was designed for client access. Examples for such protocols are POP or IMAP

Server MRA Unlike a Client MRA a server MRA listens passively for incomming connections and forwardes received Messages to a MTA for delivery and routed to be used between a Client MRA and a Remote ting. A typical protocol supported by an Server MRA is SMTP

MS-OXMAPIHTTP FIXME

MSA A Mail Sending Agent. This agent sends mails to a Server MRA.

MTA A Mail Transfer Agent. This transfer agent routes mails between other components. Typically an MTA receives mails from an MRA and forwardes them to a MDA or MSA. The main task of a MTA is to provide

reliable gueues and solid track of all mails as long as they are not forwarded to another MTA or local storage.

MTS A Mail Transfer Service. This is a set of agents which provide the functionallity tor send and receive Messages and forward them to a local or remote store.

MSS A Mail Storage Service. This is a set of agents providing a reliable store for local mail accounts. It also provides Interfacing which enables clients to access the users mail.

MUA A Mail User Agent. This user agent reads mails from a local storage and allows a user to read existing mails, create and modify mails.

Privacy From the Oxford English Dictionary: "

- The state or condition of beeing withdrawn from the society of others, or from the public intrest; seclusion. The state or condition of beeing alone, undisturbed, or free from public attention, as a matter of choice or right; freedom from interference or intrusion.
- 2. Private or retired place; private apartments; places of retreat.
- 3. Absence or avoidance of publicity or display; a condition approaching to secrecy or concealment. Keeping of a secret.
- 4. A private matter, a secret; private or personal matters or relations; The private parts.
- 5. Intimacy, confidential relations.
- 6. The state of being privy to some act.

"[68, FIXME]

In this work privacy is related to definition two. Mails should be able to be handled as a virtual private place where no one knows who is talking to whom and about what or how frequent (except for directly involved people).

MDA. Unlike IMAP it is not able to maintain a mail store. Its sole purpose is to fetch and delete mails in a server based store. Modifying Mails or even handling a complex folder structure is not doable with POP

Service FIXME

SMTP SMTP is the most commonly used protocol for sending mails across the internet. In its current version it has been specified in [42].

Storage A store to keep data. It is assumed to be

Glossary

temporary or persistent in its nature.

user FIXME

UBE FIXME

Bibliography

- Martin Abadi, Mike Burrows, Mark Manasse, and Ted Wobber. "Moderately hard, memory-bound functions". In: ACM Transactions on Internet Technology (TOIT) 5.2 (2005), pp. 299-327. URL: http:// www.isoc.org/isoc/conferences/ndss/03/ proceedings/papers/2.pdf (cit. on p. 30).
- [2] Luis von Ahn, Andrew Bortz, and Nicholas J. Hopper. "k-Anonymous Message Transmission". In: Proceedings of the 10th ACM Conference on Computer and Communications Security (CCS 2003). Ed. by Vijay Atluri and Peng Liu. ACM Press, Oct. 2003, pp. 122-130. DOI: 10.1145/948109.948128. URL: http: //www.abortz.com/papers/k-anon.pdf (cit. on p. 19).
- [3] IS Amiri and MRK Soltanian. Theoretical and Experimental Methods for Defending Against DDoS Attacks. Syngress, 2015. URL: https: //books.google.ch/books?hl=de&lr= &id = 75 - 4CgAAQBAJ & oi = fnd & pg = PP1 & dq = Theoretical + and + experimental + methods + for + defending + against + ddos + attacks & ots = U _ 12I0fVIP & sig = Zx6g2jDjUPRBur -Y3k0kJm0Hlvk #v=onepage&q=Theoretical% 20and % 20experimental % 20methods % 20for % 20defending % 20against % 20ddos % 20attacks&f=false (cit. on p. 29).
- AMQP v1.0. AMQP.org, Oct. 2011. URL: http:// www.amqp.org/confluence/display/AMQP/ AMQP+Specification (cit. on p. 16).
- [5] Banks Andrew and Gupta Rahul. MQTT. en. OASIS, Apr. 2014. URL: http://docs.oasis-open.org/ mqtt/mqtt/v3.1.1/mqtt-v3.1.1.pdf (cit. on p. 16).
- [6] Elias Athanasopoulos, Mema Roussopoulos. Kostas G. Anagnostakis, and Evangelos P. Markatos. "GAS: Overloading a File Sharing Network as an Anonymizing System". In: Proceedings of Second International Workshop on Security, (IWSEC 2007). Nara, Japan, 2007. URL: http://dcs.ics.forth.gr/ Activities/papers/gas%20iwsec07.pdf (cit. on p. 26).
- [7] Tuomas Aura, Pekka Nikander, and Jussipekka Leiwo. "DOS-resistant authentication with client puzzles". In: International workshop on security protocols. Springer. 2000, pp. 170-177. URL: @inproceedings{aura2000resistant, , author = {Aura , TuomasandNikander , PekkaandLeiwo , Jussipekka } ,booktitle = {Internationalworkshoponsecurityprotocols} ,pages = $\{170 -- 177 \}$,year = $\{2000 \}$, organization = {Springer} } (cit. on pp. 29,
- Marco Valerio Barbera, Vasileios P. Kemerlis, Vasilis Pappas, and Angelos Keromytis. "CellFlood: Attacking Tor Onion Routers on the Cheap". In: Proceedings of ESORICS 2013. Sept. 2013. URL: http:

- //www.cs.columbia.edu/~vpk/papers/ cellflood.esorics13.pdf (cit. on p. 25).
- Kevin Bauer, Damon McCoy, Dirk Grunwald, Tada-[9] yoshi Kohno, and Douglas Sicker. "Low-Resource Routing Attacks Against Tor". In: Proceedings of the Workshop on Privacy in the Electronic Society (WPES 2007). Washington, DC, USA, Oct. 2007. DOI: 10.1145/1314333.1314336. URL: http: //systems.cs.colorado.edu/~bauerk/ papers/wpes25-bauer.pdf (cit. on p. 25).
- Mike Belshe, Roberto Peon, and Martin Thomson. Hypertext Transfer Protocol Version 2 (HTTP/2). RFC 7540. May 2015. DOI: 10.17487/rfc7540. URL: https://rfc-editor.org/rfc/rfc7540.txt (cit. on p. 15).
- Alex Biryukov, Ivan Pustogarov, and Ralf Philipp Weinmann. "TorScan: Tracing Long-lived Connections and Differential Scanning Attacks". In: Proceedings of the European Symposium Research Computer Security - ESORICS'12. Springer, Sept. 2012. URL: http://freehaven.net/anonbib/ papers / torscan - esorics2012 . pdf (cit. on p. 25).
- Alex Biryukov, Ivan Pustogarov, and Ralf-Philipp [12] Weinmann. "Trawling for Tor Hidden Services: Detection, Measurement, Deanonymization". In: Proceedings of the 2013 IEEE Symposium on Security and Privacy. May 2013. URL: http://www. ieee - security . org / TC / SP2013 / papers / 4977a080.pdf (cit. on p. 25).
- Carsten Bormann, Klaus Hartke, and Zach Shelby. RFC7252: The Constrained Application Protocol (CoAP). RFC 7252. June 2014. DOI: 10.17487/ rfc7252. URL: https://rfc-editor.org/rfc/ rfc7252.txt (cit. on p. 16).
- S. Bradner. RFC2119 Key words for use in RFCs to Indicate Requirement Levels. IETF, 1997. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc2119.pdf (cit. on p. 48).
- Campaign Monitor. 2012. URL: http://www. campaignmonitor.com/resources/will-itwork/email-clients/(cit. on p. 28).
- David Chaum. "Untraceable Electronic Mail, Return, Addresses, and Digital Pseudonyms". In: Communications of the ACM (1981). URL: http://www. title={DOS-resistantauthenticationwithclientpu22185 as .edu/~shmat/courses/cs395t_ fall04/chaum81.pdf (cit. on pp. 20, 22, 24).
 - David Chaum. "The Dining Cryptographers Problem: Unconditional Sender and Recipient Untraceability". In: Journal of Cryptology 1 (1988), pp. 65-**75**. **URL**: http://www.cs.ucsb.edu/ ~ravenben / classes / 595n - s07 / papers / dcnet-jcrypt88.pdf (cit. on p. 23).

- [18] Ian Clarke, Oskar Sandberg, Brandon Wiley, and Theodore W. Hong. "Freenet: A Distributed Anonymous Information Storage and Retrieval System". In: Proceedings of Designing Privacy Enhancing Technologies: Workshop on Design Issues in Anonymity and Unobservability. July 2000, pp. 46–66. URL: http://citeseer.nj.nec.com/ clarke00freenet.html (cit.on p. 25).
- [19] Henry Corrigan-Gibbs and Bryan Ford. "Dissent: Accountable Anonymous Group Messaging". In: Proceedings of the 17th ACM Conference on Computer and Communications Security. CCS '10. Chicago, Illinois, USA: ACM, 2010, pp. 340–350. ISBN: 978-1-4503-0245-6. DOI: 10.1145/1866307.1866346. URL: http://doi.acm.org/10.1145/1866307.1866346 (cit. on p. 26).
- [20] M. Crispin. RFC3501 INTERNET MESSAGE ACCESS PROTOCOL - VERSION 4rev1. IETF, 2003. URL: http://tools.ietf.org/pdf/ rfc3501.pdf (cit. on p. A7).
- [21] Norman Danner, Sam DeFabbia-Kane, Danny Krizanc, and Marc Liberatore. "Effectiveness and detection of denial of service attacks in Tor". In: Transactions on Information and System Security 15.3 (2012), 11:1–11:25. DOI: 10.1145/2382448. 2382449. URL: http://arxiv.org/pdf/1110.5395v3.pdf (cit. on p. 25).
- [22] Roger Dingledine and Nick Mathewson. *Tor Protocol Specification*. URL: https://gitweb.torproject.org/torspec.git/tree/torspec.txt (cit. on p. 25).
- [23] Sujata Doshi, Fabian Monrose, and Aviel D Rubin. "Efficient memory bound puzzles using pattern databases". In: International Conference on Applied Cryptography and Network Security. Springer. 2006, pp. 98–113. URL: https://pdfs.semanticscholar.org/7f4c/79649a55eecbcf8c2fbf4f8b0c5e68e2376a.pdf (cit. on p. 30).
- [24] M. Elkins. RFC2015 MIME Security with Pretty Good Privacy (PGP). IETF, 1996. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc2015.pdf (cit. on p. 1).
- [25] Email Client Market Share. 2014. URL: http://emailclientmarketshare.com/(cit. on p. 28).
- [26] Nathan Evans, Roger Dingledine, and Christian Grothoff. "A Practical Congestion Attack on Tor Using Long Paths". In: *Proceedings of the 18th USENIX Security Symposium*. Aug. 2009. URL: http://freehaven.net/anonbib/papers/congestion-longpaths.pdf (cit. on p. 25).
- [27] Fact Sheet Suite B Cryptography. 2008. URL: http: //www.nsa.gov/ia/industry/crypto_ suite_b.cfm (cit. on p. 22).
- [28] W. Feng, E. Kaiser, and A. Luu. "Design and implementation of network puzzles". In: Proceedings IEEE 24th Annual Joint Conference of the IEEE Computer and Communications Societies. Vol. 4. Mar. 2005, 2372–2382 vol. 4. DOI: 10.1109/INFCOM.2005.1498523. URL: http://ieeexplore.ieee.org/document/1498523/ (cit. on p. 30).

- [29] W. c. Feng and E. Kaiser. "The Case for Public Work". In: 2007 IEEE Global Internet Symposium. May 2007, pp. 43–48. DOI: 10.1109/GI.2007.4301429 (cit. on p. 30).
- [30] N. Freed and N. Borenstein. *RFC2045 Multipurpose Internet Mail Extensions; (MIME) Part One: Format of Internet Message Bodies.* IETF, 1996. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc2045.pdf (cit. on pp. 1, 17).
- [31] N. Freed and N. Borenstein. *RFC2046 Multipurpose Internet Mail Extensions; (MIME) Part Two: Media Types.* IETF, 1996. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc2046.pdf (cit. on p. 17).
- [32] R. Gellens and J. Klensin. RFC4409 Message Submission for Mail. IETF, 2006. URL: http://tools. ietf.org/pdf/rfc4409.pdf (cit. on pp. 27, 28).
- [33] Sharad Goel, Mark Robson, Milo Polte, and Emin Gun Sirer. Herbivore: A Scalable and Efficient Protocol for Anonymous Communication. Tech. rep. 2003-1890. Ithaca, NY: Cornell University, Feb. 2003. URL: http://www.cs.cornell.edu/People/egs/papers/herbivore-tr.pdf (cit. on p. 26).
- [34] Philippe Golle and Ari Juels. "Dining Cryptographers Revisited". In: *Proceedings of Eurocrypt 2004*. May 2004. URL: http://crypto.stanford.edu/~pgolle/papers/nim.pdf (cit. on p. 23).
- [35] Bogdan Groza and Dorina Petrica. "On Chained Cryptographic Puzzles". In: URL: https://www.researchgate.net/profile/Dorina_Petrica/publication/228973617_On_chained_cryptographic_puzzles/links/004635310530eb4340000000.pdf (cit. on p. 30).
- [36] Ceki Gülcü and Gene Tsudik. "Mixing E-mail With Babel". In: Proceedings of the Network and Distributed Security Symposium NDSS '96. IEEE, Feb. 1996, pp. 2–16. URL: http://citeseer.nj.nec.com/2254.html (cit. on p. 24).
- [37] Amir Houmansadr, Chad Brubaker, and Vitaly Shmatikov. "The Parrot is Dead: Observing Unobservable Network Communications". In: Proceedings of the 2013 IEEE Symposium on Security and Privacy. May 2013. URL: http://www.cs.utexas.edu/~amir/papers/parrot.pdf (cit. on p. 21).
- [38] Jan Iwanik, Marek Klonowski, and Miroslaw Kutyłowski. "DUO-Onions and Hydra-Onions Ufailure and adversary resistant onion protocols". In: Communications and Multimedia Security. Springer. 2005, pp. 1–15. URL: http://dl.ifip.org/db/conf/cms/cms2004/IwanikKK04.pdf (cit. on p. 26).
- [39] AJP Jeckmans. "Practical client puzzle from repeated squaring". In: (2009). URL: http://essay.utwente.nl/59133/1/scriptie_A_Jeckmans.pdf (cit. on p. 29).
- Aaron Johnson, Chris Wacek, Rob Jansen, Micah Sherr, and Paul Syverson. "Users Get Routed: Traffic Correlation on Tor by Realistic Adversaries". In: Proceedings of the 20th ACM conference on Computer and Communications Security (CCS 2013). Nov. 2013. URL: http://www.ohmygodel.com/publications/usersrouted-ccs13.pdf (cit. on p. 25).

- [41] Ari Juels and John G Brainard. "Client Puzzles: A Cryptographic Countermeasure Against Connection Depletion Attacks." In: NDSS. Vol. 99. 1999, pp. 151–165. URL: http://www.isoc.org/isoc/conferences/ndss/99/proceedings/papers/juels.pdf (cit. on pp. 29, 30).
- [42] J. Klensin. *RFC5321 Simple Mail Transfer Protocol.* IETF, 2008. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc5321.pdf (cit. on pp. 17, 26, A7).
- [43] Neal Koblitz, Alfred Menezes, and Scott Vanstone. *Guide to Elliptic Curve Cryptography.* 2004. URL: http://www.ams.org/journals/mcom/1987-48-177/S0025-5718-1987-0866109-5.pdf (cit. on p. 22).
- [44] Butler W. Lampson. A Note on the Confinement Problem. 1973. URL: http://faculty.kfupm.edu.sa/COE/mimam/Papers/73%20A%20Note%20on%20the%20Confinement%20Problem.pdf (cit. on p. 21).
- [45] Arjen K. Lenstra. Key Length. Contribution to The Handbook of Information Security. 2004. URL: https://infoscience.epfl.ch/record/164539/files/NPDF-32.pdf (cit. on p. 22).
- [46] Brian Neil Levine and Clay Shields. "Hordes A Multicast Based Protocol for Anonymity". In: *Journal of Computer Security* 10.3 (2002), pp. 213–240. URL: http://prisms.cs.umass.edu/brian/pubs/brian.hordes.jcs01.pdf (cit. on p. 26).
- [47] Ashwin Machanavajjhala, Daniel Kifer, Johannes Gehrke, and Muthuramakrishnan Venkitasubramaniam. "I-diversity: Privacy beyond k-anonymity". In: ACM Transactions on Knowledge Discovery from Data (TKDD) 1.1 (2007), p. 3. URL: http://www.cs.cornell.edu/~vmuthu/research/ldiversity.pdf (cit. on p. 19).
- [48] Victor S. Miller. "Use of Elliptic Curves in Cryptography". In: Advances in Cryptology CRYPTO '85 Proceedings. Ed. by Hugh C. Williams. Berlin, Heidelberg: Springer Berlin Heidelberg, 1986, pp. 417–426. ISBN: 978-3-540-39799-1. DOI: 10.1007/3-540-39799-X_31. URL: http://dx.doi.org/10.1007/3-540-39799-X_31 (cit. on p. 22).
- [49] Alan Mislove, Gaurav Oberoi, Ansley Post, Charles Reis, Peter Druschel, and Dan S Wallach. "AP3: Cooperative, decentralized anonymous communication". In: Proceedings of the 11th workshop on ACM SIGOPS European workshop. ACM. 2004, p. 30. URL: http://www-dev.ccs.neu.edu/home/amislove/publications/AP3-SIGOPSEW.pdf (cit. on p. 26).
- [50] Prateek Mittal and Nikita Borisov. "Information Leaks in Structured Peer-to-peer Anonymous Communication Systems". In: Proceedings of the 15th ACM Conference on Computer and Communications Security (CCS 2008). Ed. by Paul Syverson, Somesh Jha, and Xiaolan Zhang. Alexandria, Virginia, USA: ACM Press, Oct. 2008, pp. 267–278. URL: http://www.hatswitch.org/~nikita/papers/information-leak.pdf (cit. on p. 26).

- [51] Jeffrey Mogul, Larry M Masinter, Roy T. Fielding, Jim Gettys, Paul J. Leach, and Tim Berners-Lee. Hypertext Transfer Protocol – HTTP/1.1. RFC 2616. June 1999. DOI: 10.17487/rfc2616. URL: https:// rfc-editor.org/rfc/rfc2616.txt (cit. on p. 15).
- [52] Arjun Nambiar and Matthew Wright. "Salsa: A Structured Approach to Large-Scale Anonymity". In: *Proceedings of CCS 2006*. Nov. 2006. URL: http://ranger.uta.edu/~mwright/papers/salsaccs06.pdf (cit. on p. 26).
- [53] Suresh Venkatasubramanian Ninghui Li Tiancheng Li. "t-Closeness: Privacy Beyond k-Anonymity and". In: (). URL: http://www.cs.purdue.edu/homes/ li83/papers/icde_closeness.pdf (cit. on p. 19).
- [54] Lasse Øverlier and Paul Syverson. "Locating Hidden Servers". In: Proceedings of the 2006 IEEE Symposium on Security and Privacy. IEEE CS, May 2006. URL: http://tor-svn.freehaven.net/ anonbib/cache/hs-attack06.pdf (cit. on p. 25).
- Andreas Pfitzmann and Marit Hansen. A ter-[55] minology for talking about privacy by data Unlinkability, minimization: Anonymity, detectability, Unobservability, Pseudonymity, and Identity Management. http://dud.inf.tudresden.de/literatur/Anon_Terminology_v0.34.pdf. v0.34. Aug. 2010. URL: http://dud.inf. tu - dresden . de / literatur / Anon \ _Terminology $\ \ v0 . 34 . pdf$ (cit. on pp. 19,
- [56] Jon Postel and Joyce Reynolds. *RFC 959: File trans- fer protocol.* 1985. URL: https://tools.ietf.org/pdf/rfc959.pdf (cit. on p. 15).
- [57] B. Ramsdell. RFC2440 Secure/Multipurpose Internet Mail Extensions (S/MIME) Version 3.1 Message Specification. IETF, 2004. URL: http://tools.ietf. org/pdf/rfc2440.pdf (cit. on p. 29).
- [58] B. Ramsdell. RFC3851 Secure/Multipurpose Internet Mail Extensions (S/MIME) Version 3.1 Message Specification. IETF, 2004. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc3851.pdf (cit. on p. 28).
- [59] Marc Rennhard and Bernhard Plattner. "Practical Anonymity for the Masses with Mix-Networks". In: Proceedings of the IEEE 8th Intl. Workshop on Enterprise Security (WET ICE 2003). Linz, Austria, June 2003. URL: https://gnunet.org/sites/ default/files/RP03-1.pdf (cit. on p. 23).
- [60] P. Resnick. RFC5322 Internet Message Format. IETF, 2008. URL: http://tools.ietf.org/pdf/ rfc5322.pdf (cit. on p. 17).
- [61] R. L. Rivest, A. Shamir, and L. Adleman. "A Method for Obtaining Digital Signatures and Public-key Cryptosystems". In: Commun. ACM 21.2 (Feb. 1978), pp. 120–126. ISSN: 0001-0782. DOI: 10.1145/359340.359342. URL: http://doi.acm.org/10.1145/359340.359342 (cit. on p. 22).
- [62] Ronald L Rivest, Adi Shamir, and David A Wagner. "Time-lock puzzles and timed-release crypto". In: (1996). URL: http://bitsavers.trailing-edge.com/pdf/mit/lcs/tr/MIT-LCS-TR-684.pdf (cit. on p. 30).

- [63] J. P. Sain-Andre. *RFC3923: End-to-End Signing and Object Encryption for the Extensible Messaging and Presence Protocol (XMPP)*. IETF, 2004. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc3923.pdf (cit. on pp. 16, 17).
- [64] P. Saint-Andre. RFC3922: Mapping the Extensible Messaging and Presence Protocol (XMPP) to Common Presence and Instant Messaging (CPIM). IETF, 2004. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc3922.pdf (cit. on p. 16).
- [65] P. Saint-Andre. *RFC6120: Extensible Messaging and Presence Protocol (XMPP): Core.* IETF, 2011. URL: http://tools.ietf.org/pdf/rfc6120.pdf (cit. on p. 16).
- [66] Rob Sherwood, Bobby Bhattacharjee, and Aravind Srinivasan. "P5: A Protocol for Scalable Anonymous Communication". In: *Proceedings of the 2002 IEEE Symposium on Security and Privacy*. May 2002. URL: http://www.cs.umd.edu/projects/p5/p5.pdf (cit. on p. 26).
- [67] Peter W. Shor. "Polynomial-Time Algorithms For Prime Factorization And Discrete Logarithms On A Quantum Computer". In: *SIAM Journal on Computing* 26 (1997), pp. 1484–1509. URL: https://arxiv.org/pdf/quant-ph/9508027v2 (cit. on p. 22).
- [68] A. Stevenson. Oxford Dictionary of English. Oxford reference online premium. OUP Oxford, 2010. ISBN: 9780199571123. URL: http://www.oed.com (cit. on p. A7).
- [69] Almon Brown Strowger. "Automatic Telephone-Exchange". en. Pat. 447918. Mar. 1891 (cit. on p. 1).
- [70] Muldowney Thomas, Miller Mathew, Eatmon Ryan, and Saint-Andre Peter. XEP-0096: SI File Transfer. XMPP Standards Foundation, 2004. URL: http://xmpp.org/extensions/xep-0096.html (cit. on p. 17).
- [71] Suratose Tritilanunt, Colin Boyd, Ernest Foo, and Juan Manuel González Nieto. "Toward non-parallelizable client puzzles". In: International Conference on Cryptology and Network Security. Springer. 2007, pp. 247–264. DOI: 10.1007/978-3-540-76969-9_16. URL: http://link.springer.com/chapter/10.1007/978-3-540-76969-9_16 (cit. on p. 30).
- [72] UNHR. International Covenant on Civil and Political Rights. 1966. URL: http://www.ohchr.org/en/professionalinterest/pages/ccpr.aspx (cit. on p. 11).
- [73] Michael Waidner and Birgit Pfitzmann. "The dining cryptographers in the disco: Unconditional Sender and Recipient Untraceability". In: *Proceedings of EU-ROCRYPT 1989*. Springer-Verlag, LNCS 434, 1990. URL: http://www.semper.org/sirene/publ/WaPf1_89DiscoEngl.ps.gz (cit. on p. 23).
- [74] Brent Waters, Ari Juels, J Alex Halderman, and Edward W Felten. "New client puzzle outsourcing techniques for DoS resistance". In: Proceedings of the 11th ACM conference on Computer and communications security. ACM. 2004, pp. 246—256. URL: http://www.cs.utexas.edu/~bwaters/publications/papers/outsource_paper.pdf (cit. on p. 30).

[75] Li Zhuang, Feng Zhou, Ben Y Zhao, and Antony Rowstron. "Cashmere: Resilient anonymous routing". In: Proceedings of the 2nd conference on Symposium on Networked Systems Design & Implementation-Volume 2. USENIX Association. 2005, pp. 301–314. URL: https://www.usenix.org/legacy/publications/library/proceedings/nsdi05/tech/full_papers/zhuang/zhuang.pdf (cit. on p. 26).